मेवाड़ी लोकगीत

"मेवाड़ी भासा में भजना की किताब"

भाग-1

संग्रहकर्ता अन सम्पादक

रामसिंह चारण, रतन लाल गाडरी और गोवर्धन लाल जाट

निर्माण सोसायटी

कपासन, चित्तौड़गढ़

संपादक
रामसिंह चारण, रतन लाल गाडरी और गोवर्धन लाल जाट
सहयोगी
मुकेश कुमार योगी, कविता योगी, एवं मेवाड़ी समुदाय

●

प्रतिलिपि:
100
टाइपसेटिंग
रतन लाल योगी

●

प्रथम संस्करण
जुलाई-2019, विक्रम संवत-आषाढ़-2076
© निर्माण सोसायटी-2019

●

मुल्य
एक प्रति 50/-रु.

●

सम्पर्क
जानकी मोहन कॉम्पलेक्स, प्रथम मंजिल फ्लेट नं. 4, उदयपर रोड़,
पाँच बत्ती चौराहा के पास, कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)-312202
Email- rajasthanlanguages@nirmaan.org.in
Web- www.nirmaan.org.in
फोन नं.-01476-230014

सब अधिकार सुरक्षित है।

प्रकाशक की अग्रिम लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग आण्विक, यांत्रिकी, रिकॉर्डिंग व अन्य किसी भी रूप में या अन्य माध्यम से पुन: उत्पादित नहीं किया जा सकता है और न ही पुन: प्राप्ति पद्धति में इसका भंडारण किया जा सकता है या प्रसारित किया जा सकता है।

ओळकाण

-आपणी मेवाड़ी, आपणी भासा

मेवाड़ी साहित्य में घणी हारी बाताँ छुपी तकी हे, मेवाड़ में आकई भारत का जस्यान मेवाड़ में बी घणा भगत व्या ज्यो आपणो नाम इतिहास में अमर कर नाक्यो। याँ भगताँ का बणाया तका भजन आज बी आकई देस में आपणी छाप छोडे। याँ भजना में जोस का भजन, भगती का भजन अन ओरी भाँत-भाँत का भजनाऊँ मेवाड़ी साहित्य हुनो कोइने हे। मेवाड़ का भजन हुणन तो जनावर तक एक दाण तो हुणबा का बाते रुक जावे। याँ भजना में राग, रस, प्रेम, बलिदान, वीरता को भण्डार भर्यो तको हे। ये भजन मनकाँ में प्रेम अन हलमलन रेबा की हीक देवे अन ये भजन मेवाड़ की 'आतमा' हे। ज्ये आज तक खाली मुकजबानी में चालरी हे। खाली मुकजबानी में चालबाऊँ आज ये बाता खतम वेती जारी हे। अस्यानीस मेवाड़ी साहित्य में त्याग, बलिदान, भगती, हँसी-मजाक अन रिती-रेवाज की बाताँ घणी बतई तकी हे ज्ये आज कटे जटे मले। अस्यानीस मेवाड़ी भासा में भजन ज्यो अटाका मनकाँ का रिती-रेवाज ने खास बणाबा का बाते गावे। ये भजन गामा में ब्याव माण्डा में, थाळी परसादी में, काज कर्यावर अन कई खुसी को काम वेवे तो उटे बी गावे। अस्यान मेवाड़ी भासा में भजना की जइगाँ खास हे, भजन बना कई बी मोरत को काम ने वेवे।

मेवाड़ी भासा का भजन ज्याने टेम-टेम पे आपणा रिसी-मुनी, सादू-संत बणाया तका हे ज्ये भगवान की भगती में गुड़्या तका रेबा का बाते भजन घणा छावे। काँकी आज का मनक भजन गाबा में सोक कम राकबा लागग्या, अणी बाते लोग ईं संसार की मो-माया में फस्यो तको रेवे पण भगवान ने आद ने करे। भजन पुराणा जमानाऊँ ई आपणा ग्रंता में अन वेद पुराणा में, माभारत में, गीताँ में ज्यो बी भगती की किताबाँ हे वामें बी मल सके। भजन ईं संसार की मो-मायाऊँ छुटकारो दवान आपणी मुगती कर सके। भजन में वो जोर हे ज्यो कणी में बी ने हे काँकी भजन आपणी समाज ने एक बणान राके, भजन भगवानऊँ जुड़्या तका राके अन भजन में ज्ञान की बाताँ अतरी वेवे के सायत ओरी कणी में बी ने वे सके।

मेवाड़ में भजना को गणो मान हे, ज्यामें मीराँ का भजन, कबीर दास जी का भजन, रामानन्द जी का भजन, ओरी घणई सन्त सूरमा व्या, ज्याके भजना में घणो ग्यान भर्यो तको हे। मेवाड़ में मीराँ बई ज्यो भगवान का अतरा भजन गाया के भगवान खुद वींकी टेम-टेम पे मदद कीदी। भगती कींकई वस को होदो ने हे भजन करणा कोई खेलकण्यो ने हे, भजन में वो जोर हे ज्यो आज तक ईं दन्या का कणी जीव में ने हे।

मेवाड़ी भासा का भजन ज्याँकी राग अन गाबा को तरीको न्यारोई हे, ईं बाते "मेवाड़ माँ को पेट" नामऊँ जाण्यो जावे। अटाकी संस्कृति न्यारी जाणी जावे जीने हुणन आपणी छाती गरबऊँ चोड़ी वेजावे। मेवाड़ी भासा में अतरो साहित्य भर्यो पड़्यो तको ज्यो आज बी अणछप्यो हे। मेवाड़ का अणछप्या साहित्य ने छापन मनकाँ में पोंचाबा को काम "निर्माण सोसायटी" कररी हे। अस्यानीस मेवाड़ी भासा का लोकभजना ने गामा मूँ एगटा करन वाने छापबा को काम कररी हे। "निर्माण सोसायटी" याँ भजना ने छापन याँकी किताबाँ बणान मेवाड़ का मनकाँ में पोंचाबा को काम कररी हे, जिऊँ मेवाड़ी साहित्य ज्यो आज का जमाना में बदलाव की हवा का हस्याबऊँ पुराणा रिती-रेवाज आज काल का मनक भूलता जार्या हे, याँ रिती-रेवाजाँ ने अमर राकबा का बाते या संस्ता काम कररी हे।

अणी किताब में लमसम १३० भजन लिक्या तका हे, ज्याने हंगळई गामा में जा-जान एक-एक भजन एगटा करन लिक्या तका हे। अणी किताब में मेवाड़ का भजन लिक्या तका हे ज्याने अटाका मनक घणा चावऊँ गावे अन भगती-भाव में डुब्या तका रेवे।

मेवाड़ी भासा का भजना ने ज्यो आपणा मेवाड़ का मनक गावे ज्याँ भजना ने अणी किताब में मेवाड़ी बोली में लिकबा की कोसीस किदी हे। कस्यो बी भजन गलत वेवे कन अटाकी बोली को ने वेवे तो आपाणी हगळा मनक याँने हुदार करबा का बाते आपणी राय "निर्माण सोसायटी" का पता पे दे सको।

धन्यवाद!
निर्माण सोसायटी
कपासन (चित्तौड़गढ़)

मेवाड़ी वरणमाला

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ए	ओ	अं	

ब्यंजन

क	ख	ग	घ	
च	छ	ज	झ	
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	स
ह	ळ	ढ़		

बिसय-सुची

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
❑	सम्पादकीय	
1.	प्रस्तावना	3-4
2.	मेंवाड़ी वर्णमाला	5
3.	भजन	9-97

1.ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े

2.बार-बार तोहे क्या समजाऊँ पायल की झंकार

3.ये दो दिवाने दिले के, चलो हे देको मिला के

4.राम चन्द्र को दूत पूत पवना को

5.ठुमक ठुकम कर चाल भवानी ले हाता तलवार

6.काळो घणो रुपाळो खो

7.निले गगन के तळे

8.हनुमान जी

9.पंछीड़ा रे लाल

10.पंछीड़ा लाल आछी पढ़ी रे उलटी पाटी

11.मीरां को जाग्यो बेराग हरि का रंग में

12.माँ वंदना

13.मारे लादे रे लादे जमकुड़ी

14.सावण आयो रे

15.रसिया

16.ऊँचो-ऊँचो घाघरो मारी जाजर

17.मति कर मन अन धन रो गुमान

18.जब आवेलो बलम बेरी

19.बरसी रे बरसी बरका

20.थाने देक देक हिवड़ा

21.अंगुळी पकड़ मेरा पूँचा रे

22.बरसी रे बरसी बरका

23.थारी धजा उडती धाम

24.बरसी बरसी रे बरका बरसी सांवण

25.कन्हैया तेरी मुरली ने दिवाना कर दिया

26.रणूजा वाळो मारा काळजा री कोर

27.भाबासा री लाडली कटीने चाली रे

28.साँवरिया थारी मुरली ने

29.बरसी रे बरका बरसी

30.धन-धन रामा पीर ने

31.दूधा रे रंग धन पूता ने रंग

32.रावण मरयो रे लंका में राजा

33.रामदेव परणावे थें परणो भाटी हरजी

34.धूप रे धूँवाडे बेगा आवज्यो

35.धूप रे धूँवाडे

36.कोई रोकिया कोई रोकिया रामापीर ने

37.धन बाबाजी धन बाबाजी रे

38.धन धन रामा पीर लजिया

39.धन बाबाजी रे

40.काना थारी मुरली ने

41.धन बाबा जी धन बाबा जी रे

42.देवळ रमें जी देवळ रमें

43.उण्डा-उण्डा खादरा में नोपताँ बाजे

44.थाळी भरने लाई खींचड़ो

45.सूती नर आयो रे जंजाळ

46.घूमर

47.त्रिलोकी को नाथ जाट के बणग्यो हाळी रे

48.सतगरू माँ सूँ मिलता जाज्यो जी

49.ओ मोवन मुरली मण्डप्ये बजाई रे

50.राग–सोरठ

51.पायो जी मेने राम रतन धन पायो

52.सतगरू दरसण देता जाज्यो

53.में तो देक्यायो रे गडबोर

54.मेंदी लागी मारा हाताँ में

55.लावणी

56.सतगरू आया मारे

57.मारा राम रघुनात इतना सा तो

58.सिव स्याम बिना दुक कुण हरे

59.संकर रम रहा रे पाड़ामे

60.नन्द बाबा न कह दीज्यो रे

61.पाणिड़ो भरबा दे

62.मीरां को जाग्यायो बेराग हरि का रंग में

63.फागण का दन च्यार

64.आज मारी सेल्या प्यासी रे

65.राम थारी नगरी में काँई घाटो

66.बटेऊ आयो लेबा ने

67.डर लागे हांसी आवे

68.ठगणी कई नेना चमकावे

69.हुई सफल कमई महाराज

70.देका रे भाया कस्यान नट जावलो

71.खबर ने एक घड़ी पलकी

72.पशु के समान

73.मुझे बी कृष्ण प्यारो हे

74.बीणजारी

75.कर्मा की रेखा

76.नाव

77.धमाल

78.काया नगरी

79.नसा में चूर मत रहज्यो रे

80.प्यारा कानूड़ा

81.परबुजी को पतो बताओ

82.धमाल लीला

83.बावड़ी का बालाजी

84.रामधुनी

85.नर तेरा चोला रतन अमोला

86.सिव भोले भण्डारी रे

87.केयां रुस ग्यो रे नन्दलाल

88.संतो कांई आवे रे कांई जाय

89.हीरा

90.मारा सतगरु दिई छ: बताय

91.माया

92.तू मोह माया न छोड़

93.कळयुग में कदर घटी

94.सतगरु दरसण देता जाज्यो जी

95.मीरांबई

96.माने कह गया परबुजी आवण की

97.राम सुमर ले रे मन गेला

98.मारे गरुदेव घर आया रे

99.माता बेना हुणो हारई सज्जना

100.मारा जनम मरण का साती जी

101.अस्यो देस माको रे सादो भई

102.संजीवन बूंटी लाबा ने

103.सत्संग मोटी दन्याँ में रे

104.बजरंग बली

105.मईला मन ने होजो करो

106.परेम बिना राम मिले ना रे भई

107.सोरठ

108.जोबन धन पामणो दिन चार

109.करिया क्यो नहीं ब्रज रा मोर उदाजी माने

110.थारी लंका सुनी हो गई रे

111.दादो म्हारो गाँव गयो दुजा

112.थाली भरन लाई खीचड़ो

113.मनक जनम में सुकरत करलो

114.भेरुजी

115.रसिया

116.भेरूजी

117.घणा दन सो लियो रे

118.जगत में जिना दो दिन का

119.राणी मारो कई करसी भगवान

120.भज नंदिस्वर महाराज निरंजन निका

121.आसरो लीनो कृस्ण कनाई को

122.हनुमान

123.ओरत

124.भेरुजी

125.अतरो कई आळसी

126.चादर

1.ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े

ओ..... पवन वेग से उडने वाले योद्दो।

बेटा चुपचाप क्यों, मेटो संताप तू, जाओ रे लंका रण बंकाओ।

बालपणाँ में उडा अम्बर पे, सुरज का जा गरास किया।

तब छोड़ा जब आय स्वयं, देवो ने बरदान दिया॥

पवनो के पूत ओ, रघुवर के दुत ओ जाओ॥

उठो वीर रणधीर बली, झटपट सिन्दु को पार करो।

कपि दल को दे जीवन जंग, सियाराम सन्ताप हरो॥

रुद्र अवतारओ, बल के भण्डार ओ॥जाओ॥

अरे जन्म के जाती मर्द जा, सती सिया की खबर करो।

पग पग तेरी जीत होगी, सियाराम को ह्दय धरो॥

भेरव भू लाल ओ, मंगल महाकालो॥जाओ॥

2.बार-बार तोहे क्या समजाऊँ पायल की झंकार

बार बार हरिनाम सुमिरले, मत व्हे राम को चोर।

अन्त समय में तेरा होगा न कोई ओर॥टेर॥

चार दिन की चाँदणी, अन्त अंदेरी रात हे।

करले बावळा मोकळा, जोबनियो ढल जात हे॥

मान मान तो हे में समझाऊ, मद छकिया मन मोर॥अन्त॥

मात पिता भ्राता सुत, मित्र मंडली ने हवो डरे।

जमी घरा धन मेलड़ा, रहसी ठोडा ठोड रे॥

उठ उठ झगपग जाग जा, जागत मत ना गोर॥अन्त॥

छूटी गोली नाल से, थूँ तकतो ही रह जायेगो।

प्राण पंखेरु उडग्यो, फिर हँसा हात न आयेगो॥

मन की मन मे रेगी भेरव, पकड़ राम की डोर॥अन्त॥

3.ये दो दिवाने दिले के, चलो हे देको मिला के

जब जबर बली बल बंका, माँ सिया खोजने लंका

चला हे चला हे हनुमान॥टेर॥

सो योजन की एक फलडु की, कुदी गयो गर्याद समन्द की॥२॥

जा पहुँचा रण बंका, भई असुरों मन शंका॥चले हे॥

रघुकुल महिमा की सुघपाई, तरुबर से मुन्दरी छिटकाई॥२॥

दे परिचय कपि उछला, फल फुलो पे मन मचला॥चले हे॥

फल खाकर बनबान उजाड़ा, अरि सुत अकस्य को ले पछाड़ा॥२॥

कूद पडा कर हँका, असुरो का कीना फंका॥चले हे॥

मेघनात ने बाळ जती को, जाय के हूँप्यो लंकपति को॥२॥

दे नोपत पे डंका, सोने की ढाली लंका॥ जा हे॥

अपर बली जब कुदे समदर, भेरव आय गयो जां बन्दर।

करते रावण की निन्दा, कपि पहुँच ये किस्किंदा॥

चले हे चले हे हनुमान॥

4.राम चन्द्र को दूत पूत पवना को

कपि कदि न लजायो दूद मात अंजना को॥

सो योजन समंद लांग, सिया सुधि लिनी जी ।२।

अक्षय को पछाड, उजाड़ वाटिका दिनी

फिर लंका जला, जल उपर सेतु बणाई सा-

दल पदय अठारह सेना सबल सजाई

खल बलि हकि सुन हनुमान को हाँको

कपि कदि न- - - - - -।

ओट कोट ने कूद बजाया हुंका

फिर उलट पुलट गिन गिन कर किना फंका॥

ले पकड पूँछ मे मार बजड बल लंका

कपि पाड ठकायो तितर बितर लंका -२

ऐसी भारत में गढ़लगड दबायो नाको,

कपि कदि न - - - - - - -।

लक्षमण के लाग्यो तीर वीर जट आयोजी -२

जटपट उठाया जट रामादल मे लायोजी

सरजीवन पल भर मे द्रोणा गिरी मे उठायो जी-२

जा रातो रात में हात मे बूँटी लायो

आण बचायो प्राण पाबन्द बचनाको

कपि कदि न - - - - - - - -।

पाताल फोड़ जट दोड़ जोड भई तारो जी-२

अहिरावण मारयो हारयो जी दल बल सारो

ले लिनो रे बिडूलो जेल जबर युद किनो

फिर भिडे युद मे जोद जबर बल बाको

कपि कदि न - - - - - - -।

विसराम घाटकर ठाट पाट आंदण मे-२

ले बावन भेरु चोसठ जोगण्या संग में

करज्यो दंगल मे मंगल रामा रंग मे-२

मारे आण विराजो रुम रुम अंग अंग मे-२

भेरव हे यो चाकर हे चरणा को जी

कपि कदि न ल जाये - - - - ।

5.ठुमक ठुकम कर चाल भवानी ले हाता तलवार

भवानी मारी जगतम्बा॥

अब दुर्बल के हलकारे भवानी आवज्यो ये - - - - -॥

1.गेर गुमारो पेर घाघरो, ओडण दकणी रो चीर

भवानी मारी जगतम्बा॥

झाँझर रे झणकारे भवानी आवज्यो ये - - - -।

2.अब कसणो कांकण बाघ गळा में, ले लो लख रो हार

भवानी मारी जगतम्बा॥

ऐ हाता में बाजुबन्ध मैया पेर लो ये - - - - - ।

ठुमक ठुमक कर - - - - - -।

3.थारी रे माता करुँ चाकरी जनम जनम के माय

भवानी मारी जगतम्बा

ऐ सिंह पे चढि रे माता आवज्यो ऐ - - - - ।

4.अरज करु चरणा में मेया, मे चरणा रो दास

भवानी मारी जगम्बा।

अरजुन की अरदास भवानी सामलो ऐ - - - - ।

ओ ठुमक ठुमक - - - - -॥

6.काळो घणो रुपाळो खो

काळो घणो रुपाळो खो, गडावोरिया वाळो रे।

श्री चार भुजा को नाथ चतुर्भुज माळा वाळो रे-टेर

सिर पर सोहे मुकुट मनोहर, कुन्डळ की छबी न्यारी रे

निलो वस्त्र पिताम्बर सोहे, बागा री हद मारी रे

जलमल 2 तुर्रो, मळके माळो रे श्री चार भुजा को - - - - - -॥

कडी जड़ाऊ थोर काना, सोना रा तो गहना रे -२

मन मनोहर माळा मुस्काये नेणा थारा मोटा रे -२

अधर धरी मुरली तो राजे, छेल छोगाळो रे -

श्री चार भुजा को - - - - -।

कड़ा नेवरी कमर कन्दोरा, पग पायळ झाँजरिया रे -२

चाल जळकती हिये हळकती, सोच रे साँवरियाँ रे -२

छन्नी चवर तो सिर पे साजे, लागे माळो रे-

श्री चार भुजा को - - - - - -।

सेज पालकी राम रेवाड़ी, चाँदी जड़ियो चोक रे -२

ग्यारस झुले बेट साँवरो, दन्याँ दरसण आवे रे -२

थाळी मादळ गेरी बाजे, घणो नकराळो रे-

श्री चार भुजा को - - - - -।

साँवळ सेठ कळू में गाज्यो, दिज्ये थोड़ो जेलो रे -२

कह 'भेरव' सुन भण्डार वाळा, सुणज्यो मारो हेलो रे

भोळा ढाळा भगताँ को तो, राम रुकाळो रे-

श्री चार भुजा को - - - - -।

7.निले गगन के तळे

उड़ हनुमान चले॥२॥

दिनी खबरिया, डाली मुंदडिया, वरक्स अशोक तळे - - -।

निले गगन के तळे॥

बाग उजाड़ा, अक्स पछाडा, दानव दल को तळे - - - ।

निले गगन के तळे॥

सभा मे जाई, आग लगाई, चराचर लंक जळे।

निले गगन के तळे॥

समन्दर पारा, पदम अठारा, खळदळ लंक चले - - - -।

निले गगन के तळे॥

मन मत मचले, 'भेरव' भजले लाखो विघन टळे - - - -।

निले गगन के तळे॥

8.हनुमान जी

म्हारो बेड़ो लगा दीज्यो पार, बजरंग बालाजी।टेर।

फळ खाया अन बाग उजारे, असुरां न दुख दीन्हें भारे।

मारयो मेघनात को मान।

लंका में हारई आग लगाई, सागर आन पूछ बुझाई।

उनकी भली करी भगवान।२।

लंका वाले सब घबराये, घर से निकल बाहर सब आये।

ऐसी आयो हे बलवान।३।

हनुमत सीता ढिग आये, चरणो में आके सीस नमावे।

सीया दे दीनो वरदान।४।

लंका से चल प्रभु ढिग आये, सीताजी की खबर सुनाये।

कर 'रुड़मल' गुरग गान।५।

9.पंछीड़ा रे लाल

पंछीड़ा रे लाल, सूतो कईयां चादर ताण।

अब तो ओसर बीत्यो जावे, छोड़ पाछली बार।

बाळपणा हंस कर खेल गवायो, दे दे गोदी ताण।

बालसखा संग करी लड़ाई, छोडी सबकी काण।१।

जवान हुयो तब सादी कीनी, आडी फरगी जाण।

विंकी तो तु एक ने मानी, घर मे घाल्यो घाण।२।

रोज रोज थूँ फस्यो जाल में, तन कर लिन्यो हाण।

रस कस निकल गाल बेटगा, मिटगी सारी ताण।३।

कफ खांसी दुक देबा लाग्या, मोत साकड़ी जाण।

साटी लाटी ले ली हाता, अब भी हर ने जाण।४।

इतनी खारी होगी तुम मे, अब तो कर कई काण।

दास 'रुड़मल' कत कर गावे, जाण सके तो जाण।५।

10.पंछीड़ा लाल आछी पढ़ी रे उलटी पाटी

पंछीड़ा लाल आछी पढ़ी रे उलटी पाटी।

ऊं मालिक न भूल गयो तू, लक चोरासो काटी।

जीव जन्तु न खाय तू, बदन बणा लियो बाटी।

अतरी मोटी देह जळे जब, लगे बारा मण लाठी।

कसर काण न छोड़ देई अन हाता ले ली लाटी।

माकन अन दूद ने बेचे, छाछ जर केया खाटी।

जोड़ जोड़ धन कर लियो भेळो, लगा कपट की टाटी।

अपना मतलब कारणे, कयां की गरदन काटी।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, या छे जम की घाटी।

जम का दूत पकड़ कर मार, जद चाटलो माटी।

11.मीरां को जाग्यो बेराग हरि का रंग में

हरि का रंग में रे, सादा रा संग में।टेर।

जहर पियालो राणो भेज्यो दयो मीरां के हात।

कर चरणामत पी गई जी, सहाय करी रघुनात।१।

सरप पिटारो राणो दयो मीरां न जार।

खोल पिटारो देकण लागी बन गयो नोसर हार।२।

सेर जंगळ का लाय के जी, भेज्यो मीरां के पास।

गाय बन गई दरसणी जी, चरबा लागगी घास।३।

सादु आया सहर में जी, मीरां हुणरी अवाज।

तन मन मूँ सेवा करे, हरि मिलन के काज।

12.माँ वंदना

आपू आप अखंड अवतार, व्यापन चराचरी संसार,

जननी जग में जय जयकार, आज्यो अंबिका ये, माउड़ी अंबिका ये॥

चारों धाम धरा के चोखट धवळ धाम दवारा ये,

पाँच तत्व रो देवळ थारो करे होय हलकारा ये,

भय रो निर्भय नार पलाण, देवळ नवरंग उडे निसाण, जोताँ अखंड चंदा भाण॥

आज्यो..... ॥1॥

कुदरत केरो हरियाळो हे घाघरो घेर घुमाळो ये,

तारामंडळ अंबर ओडण, दकणी चीर रूपाळो ये,

सत को साळुड़ो सणगार, जिलमिल मोत्याँ तपे ललाड़, देवी दानव वंस दहाड़ ।

आज्यो..... ॥2॥

धन घमंड की गाजे नोपताँ, अणहद की जणकारा ये,

नरबे नाम का बाजे नंगारा, बीजळ तणी तलवाराँ ये,

दसो दिसाए थारे हात, काळा ओरा हे दिन रात, हाजर अगवाणी में मात ।

आज्यो..... ॥3॥

अखंड धारा अखंड बरसे करे इन्द्र बरसाळा ये,

सातों समंद संपाड़ो जेले, संख ढुळे नंद नाळा ये,

आरती तिरगुण देव सवार पूरब पछम रहे उतार पवना भंवरा की फटकार ।

आज्यो..... ॥4॥

रिद्धियाँ, सिद्धियाँ, निद्धियाँ हाजर खड़ी रहे हर बारा ये,

काम, क्रोध, मद, लोब, मोह ये, नाचे नाचण हारा ये,

यम नियम हे छडियादार बावन "भैरव" ताबेदार माँ के चरण कमल बलिहारा ये।

आज्यो..... ॥5॥

13.मारे लादे रे लादे जमकुड़ी

बाबा आज्यो रे आज्यो, थें धूप धूँवाड़े लाज्यो॥

परमळ सूँ पाट पुरावाँ पगल्या में फूल चडावाँ,

गुगळ री धूपाँ खेवाँ हे पान फूल सेवा,

गोळ का मोदक चूँटया चूरमा खाण्ड खोपरा खाज्यो॥1॥

या अगर कपूरा बाती जळके हे जगमग ज्योती,

हे गोटो रोट लंगोटी आरतड़्याँ मूँगा मोती,

राम धण्याँ रो खोळण तुळछाँ चरणामृत पाज्यो॥2॥

समरत हे स्वामी, थाँका बणज्यो सहायक माका,

धजधारी धरत्याँ धाकाँ, जग जबर जोध बल बाँका,

"भैरव" की सुण टेर, करो ना देर, आ भीड़ भगाज्यो॥3॥

14.सावण आयो रे

कटे जग जंजाळो रे, सतगरू सरणा में चालो रे,

सरणा चालो चरणा माही बेगा बेगा हालो रे॥

पंच तत्व को देवळ द्वारो तिरगुण तीन तिबारी,

सहस कमल मकमल की सेजाँ, गादी पाट गुरारी,

बारी बंद कर नाळो रे॥ सत.....॥1॥

समदरिया सो पेटो समरथ, आकासाँ सस छाया,

हिमाळे सी सील व्रति हे गंगा जेसी काया,

क्षमा या धरती रो थाळो रे॥ सत.....॥2॥

पवना जेसी पवित्र भावना, रवि समान दरसटी, सम

अग्नि ज्यूँ हे सबळ सामरथ, पाळे सब सम स्रष्टि

वृष्टि ग्यान बरसाळो रे॥ सत.....॥3॥

दया दान सत क्षमा सरलता पंचगव्य ये पाले,

काम, क्रोध, मद, लोब, मोह, तप, धुप्या पच धकाले,

पाले गरु गम प्यालो रे॥ सत.....॥4॥

गरु समान दाता नहीं दूजा, मजधारा के मजरे,

भव तारण हे जीव उबारण, नरभे "भैरव" भज रे,

धज धाणिया ने धालो रे॥ सत..... ॥5॥

15.रसिया

मन रे मनक जूण में आय कई न कई करजा रे करजा,

ममता मार जार जरणा ने जरजा रे जरजा॥

च्यार खान मूँ मनक जूण का हे ऊँचा दरजा,

ग्यान जोत कर भरम अंदारो चरजा रे चरजा॥ मन..... ॥1॥

मान मरोड़ करे थूँ काँपे, लळजा रे लळजा,

लागे राम को जेलो, गरब सब गळजा रे गळजा॥ मन..... ॥2॥

घड़ो पाप को फूटे एक दन, भरजा रे भरजा,

काया की कर राक, धरा पर धरजा रे धरजा॥ मन..... ॥3॥

भरम छोड ने जाय भडे तो काम सभी सरजा,

गुराँ पीराँ सूँ पाय पदारत तरजा रे तरजा॥ मन..... ॥4॥

मोह माया की हाय लाय, मूँ टरजा रे टरजा,

किया भयंकर पाप काप सूँ डरजा रे डरजा॥ मन..... ॥5॥

दे दे जीवन मोड़ खोड़ सूँ फरजा रे फरजा,

नहीं तर "भैरया" नाक डुबो कर मरजा रे मरजा॥ मन... ॥6॥

16.ऊँचो-ऊँचो घाघरो मारी जाजर

हरिया हरिया रूँकड़ा में हरियाळी मझधार,

आयेंगे राम मेरे में करती हूँ नित इन्तजार।

मैं अधम अनाड़ी नार रे, में भीलण जात गंवार रे,

मेरे मन माळा के हार रे, सब जग के सरजण हार ॥ आयेंगे.....

राम दया के सागर की में वन में बाट निहारूँ,

आंगण ऊजळो करूँ हमेसाँ, नित की पथ बुहारूँ,

ऊंडी-ऊंडी आँक लगाने देखूँ नजर पसार॥ आयेंगे..... ॥1॥

घास माटी की कुटिया माही आंगण धरूँ चटाई,

पान फूल का करूँ बिछौना बेटेंगे रघुराई,

भीलण के घर भोग बेर के कब जीमेंगे आर॥ आयेंगे..... ॥2॥

सजा धजा करके यूँ कुटिया, देखूँ बेर-बेर,

मीटे-मीटे चाख-चाख ने लावूँ भोग हेर हेर,

खट्टे मीटे छाँट ने न्यारे रखूँ, जोळी में डार॥ आयेंगे..... ॥3॥

गरु देव के वचनो पर हे भारी विश्वास ,

बूढ़ी हो गई नेम निभाते दर्शण की मन आस,

"भैरव" हो भव पार नायकर गरुवाणी गंगाधार॥ आयेंगे..... ॥4॥

17.मति कर मन अन धन रो गुमान

पीवजी पदारत मारे परबारे देस, चूंदड़ ओडाई रे मूंगा मोला री।

हीरा रा हजारी मारा लाकाँ रा लेवाळ, चूंदड़ ओडाई रे मूंगा मोला री॥

रती की न पाव की न सेर की रे नाथ,

अजब अनोकी अणतोला री॥ चूंदड़..... ॥1॥

लाखीणी लाला की रे लूम्बक किनार,

जड़ाई सांचा रे मोती धोळा री॥ चूंदड़..... ॥2॥

चारों ही पल्ला पे मण्डचा पदारत च्यार,

मज में सारंगी, मीठा बोला री॥ चूंदड़..... ॥3॥

चूंदड़ ओडन वेगी पीया जी की लार,

कुसंग छूटी रे पाचोई गोलां री॥ चूंदड़..... ॥4॥

छाने न भागी रे मूँ तो चोड़े ना चाली रे,

"भैरव" चाली रे बाजताँ ढोलाँ री॥ चूंदड़..... ॥5॥

18.जब आवेलो बलम बेरी

थारे जोड़ाँ-जोड़ाँ हात, मारा परथी रा नाथ,

मारा द्वारका रा नाथ, धीरे-धीरे हांको थोड़ी रथड़ी ने ॥

गेले-गेले गडरी में हाको मारा साँवरा,

उपट जावे रे थारा घुड़ला ये बावरा,

बाग हाताँ में राको पकड़ी ने ॥ धीरे..... ॥1॥

काँटा भाटा रे कूदे बंकट बाटाँ,

मारे फलांगा ये तो ओगट घाटा,

जटको रे लागो मारी नथड़ी ने ॥ धीरे..... ॥2॥

नाळा रे खाळा नद जाड़ी जाकडरियां,

छोड डगर ये तो कूदे डूंगरियाँ,

ठमको लागे रे माते रकड़ी ने ॥ धीरे..... ॥3॥

गीताँ के रथ के नाथ पटे रे,

गावाँ गीतड़ला तो जीबाँ कटे छे,

धचक-धचक नाके छकड़ी ने ॥ धीरे..... ॥4॥

अटीनू उछळ ने वटीने पड़ाँ छाँ,

रथ की रथ मूव कटीने गडां छां,

नीचे राको ने चाबुक लकड़ी ने ॥ धीरे..... ॥5॥

कांकण, गेंद गेणा तमण्या ने ढाबाँ,

माहेरा का गाबा कन जीबां ने ढाबाँ,

माहेरा की गाठी ढाबाँ गठड़ी ने ॥ धीरे..... ॥6॥

गरड़-धरड़ कड़के रथड़ा का चका,

छूटे छे छका माका थाँका कई लागे टका,

धीमी चलाता कई रथड़ी ने ॥ धीरे..... ॥7॥

राधा रुकमण जी ने भूलां तो आई "भैरया" ,

गोळा रे डूँटी डागिया साँवरिया धीमा गेरिया,

पाटी बांध लो गाटी नसड़ी ने ॥ धीरे..... ॥8॥

19.बरसी रे बरसी बरका

छळके रे छळके छेली छळके छोगाळा माथे छळके,

पेचे तुर्रे हे तार हजार, मूंगा मोती मळके॥ छळके..... ॥

रंग रंगीलो चटा पटा रो बागो गेर धूमाळो,

जरकस उपर जड़्या जड़ावूं लप्यो लेर लुमाळो,

काना कुण्डळ जीणा जीणा जेला जळके ॥ छळके..... ॥1॥

कंटी डोरा गोप गळा में हिये हीरा का हार,

संक चक्र कर गदा पदम हे, रूप चतुर्भुज धार,

कमर कटारो तलवारयाँ वे ढालां ढळके ॥ छळके..... ॥2॥

डाडी माही हीरो दमके भाळ तिलक हे चंदण,

पीताम्बरिया उडे दुपट्टो लटके लाला लड़ीयन,

हे "भैरया" हाताँ में भँवरयो भालो भळके ॥ छळके..... ॥3॥

20.थाने देक देक हिवड़ा

हट ना पकड़ो अरी गोरजा मानो मारी बात री,

थाने परणबा आवेलो ओगड़ियो भोळानाथ री।

होकर नंदिया पे असवार, सिर पे साँपों का सिणगार,

जान्या भार भूतड़ा लार, आसी साथ री ॥ थाने.....॥

थूँ ओडे साल सुरंगी, वो रमे अंग राकोड़ी,

थूँ तो केसर की क्यारी, वो बाबो अलख अगोरी,

जोड़ी ऊँट बळद की बाया, थारी कंचन बरणी काया,

ना वर तेरे मन चाया, हे ओकात री ॥ थाने.....॥1॥

थूँ महल पळी सुकुमारी, वो बाबोजी वनखंडी,

बेरान करे वो बासा, नहीं रहने की हे मंडी,

गळ नर मुण्डन की माळा, तन नाग भुजंगी काळा,

ओड बागाम्बर छाला, मसाणा रात री ॥ थाने.....॥2॥

आक धतुरा संख्या खावे, अमल्यारी गांगड़ली,

वो हरियाळा बागाँ री नत पीवे हे भांगड़ली,

वो धुप्या रोज धकावे, बण जोगी अलक जगावे,

थारी मातड़ळी समजावे, मेना मातरी ॥ थाने.....॥3॥

माँ में तो उनकी दासी हूँ जनम-जनम अनुरागी,

बोली यूँ गिरजा माँ से हे "भैरव" वा बड़भागी,

मेरा शिव भोळा भरतार, मारो सिंदुरी सणगार,

मारा हिवड़ा बचला हार, जोड़ूँ हात री ॥ थाने.....॥4॥

21.अंगुळी पकड़ मेरा पूँचा रे

पला पकड़ ने अंगुळी पकड़ी, पूँचा पकड़ कर मोड़ दिया,
ओ मैया तोरे काना ने गागर हमारा फोड़ दिया, नत का मोती तोड़ दिया ॥
पाणीड़ो हम लेने जावें पनघट माते यो आवे,
ले गोळ-गोळ कांकरी मारे फोड़ मटकियाँ दुरकावे,
हम पकड़े तो हात नी आवे, ऐसा भागे दोड़ दिया ॥ ओ मैया..... ॥1॥
जमुना जी में नावा जावे, छाने- छाने वह आवे,
साड़ी चोली चीर चोरने, लेय कदम पर यह जावे,
मरे सरम की मारी जळ में, बीण बजा मुख मोड़ लियो ॥ ओ मैया ... ॥2॥
माकन दहिया बेचन जावे, गोकुळ से मथुरा नगरी,
धेनु चरातो मारग रोके, लपट रपट जपटे गगरी,
ग्वाळ बाळ ने दही लुटावे, थर-थर ने हबोड़ लिया ॥ ओ मैया..... ॥3॥
तन सुख मन सुख प्रेम सखा ओर श्रीदामा को संग लाए,
छाने-छाने घुस जा घर में माकन दहिया खा जावे,
कई बार हमने पकड़ा पर बातें सुण-सुण छोड़ दिया॥ ओ मैया ..... ॥4॥
तूँ हे भात भरे मत भैया, नंद मोर का नटवरिया,
बड़ा चोर चालाक कन्हैया छळिया पूरा नटखटिया,
“भैरव” सुन भगवत की लीला चरण कमल चित जोड़ दिया॥ ओ मैया..... ॥5॥

22.बरसी रे बरसी बरका

मरसी वा मरसी नानी मरसी, भाग्याई मने सरसी,
मारो भगत बो करे छे विलाप, हे भोळो नरसी॥ ओ. म... ॥
राधा रुकमण गाटी बेटो, होले होले हालरिया,

ओर मायरा ठाणे पूगा, आप गेले चालरिया,

जाय पुगालाँ बगत ऊपरे, बाई हरसी ॥ ओर मायरा.....॥1॥

अगर बगत पर नही पुगालाँ, ऊठ जावसी पेठ,

नानी बाई ने मोसा बोले सासू देवर जेठ,

बीरा जी री बाट जोवताँ, नानी तरसी ॥ ओ. म.....॥2॥

भगत हमारा आज अकेला, साधाँ री बेगार,

ठीक दोपेराँ पूगणो सुण राधा रुकमण नार,

भगताँ का हराप बेड़ा कानो डरसी ॥ ओ. म.....॥3॥

मारो घणो भरोसो वींने मारे सांवरियो आसी,

राधा रुकमण संग लेयने अटे मायरियो लासी,

हे "भैरया" भगताँ भीड़ भगत भरसी ॥ ओ. म.....॥4॥

23.थारी धजा उडती धाम

मन करे यो रंग हजार, मन यो बहुरंगी,

थूँ रीज्ये घणो हुँस्यार, मन यो बहुरंगी॥

यो कदीक बेचे ओडलो, यो कदीक लेवे घोटलो,

यो लेवे बंदुकाँ जोड़लो, कदी बणे यो करम खोड़लो,

कद खेले तीर तलवार ॥ मन यो.....॥1॥

टपर्या में कदीक छाजा, यो कदीक बणजा राजा,

यो कदीक बजावे बाजा, यो खावे खिंचड़ी खाजा,

कद बणजावे दातार ॥ मन यो.....॥2॥

यो कदीक वेजा राजी, पल में वेजा वेराजी,

यो कदीक बणजा साजी, कद बणजा पंडत काजी,

कद करे ग्यान परच्यार ॥ मन यो..... ॥3॥

कद खिल खिल यो हंस जावे, कद रोवे रुदन मचावे,

कद हंग हंगतो वे जावे, कद मंगतो बण ललचावे,

कद बणजावे लाचार ॥ मन यो..... ॥4॥

मनमतंग हाती गेंडो, वे कदीक पागल बेण्डो,

कर कदिक भोळयो मुण्डो, छळबळियो बणजा गुण्डो,

बण मीठी छुरी कटार ॥ मन यो..... ॥5॥

यो बेट जाय तगत जी, कद खेले जाय रगत जी,

कद रमता जाय जगत जी, यो बणजा कदी भगत जी,

कद भोगे चंचला नार ॥ मन यो..... ॥6॥

कद करे धरम की काट जी मन कदीक बणजा लाट जी,

यो कदीक खाले घाट जी, भई कदीक हेपट पाट जी,

"भैरया" नहीं आवे इतबार ॥ मन यो..... ॥7॥

24.बरसी बरसी रे बरका बरसी सांवण

वारी वारी रे बाबा वारी, बलिहारी नेजाधारी ने।

जठे उडे रे निसाण, रणुजे निरंकारी ने॥

चेत सुदी पाँचम ने आया, पालणिये पोडाया,

कंकू केरा पगल्या मांडचा पड़्या दूद उपणाया,

नेजा नंगारा सुल्टा बाज्या, नकळंग अवतारी ने ॥ रणुजे..... ॥1॥

बाळीनाथ की धुण्याँ धोकी, गेंदुड़ो धमकायो,

भेरुड़ा रागस ने मारयो, थळियाँ भार हटायो,

कर में भँवरयो भालो धार, भळक भळकारी ने ॥ रणुजे..... ॥2॥

राईका ने कियो जीवतो, सूखा बाग लगाया,

पड़ीयारा ने परचा देने, बाई सुगणा ने लाया,

भाणेजा ने जीवत कीनो, प्राण उबारी ने ॥ रणुजे..... ॥3॥

परच्या लेवण पाँच पीर, मक्का सूँ चल कर आया,

पीरां का प्याला मंगवाने, दूद कटोरा पाया,

बाज्या पीरा हाते पीर, आलम अदकारी ने ॥ रणुजे..... ॥4॥

बाळदियो बाळद भर लायो, भगताँ ने इतवारी,

पूँछे रामदे सांच न बोल्यो, मिसरी खारी कर डारी,

धोक्या धणी ने तो वा मीठी, कीदी खारी ने ॥ रणुजे ..... ॥5॥

बोयतिया बाण्या के आया, समंदाँ के मजधार,

जाँज डुबण लागी भँवरा, धणियाँ सुणी पुकार,

चोपड़ रमताँ आप उबारी, भुजा पसारी ने ॥ रणुजे..... ॥6॥

दरजी खातर दोड़न आया, हरजी का दुक मेटचा,

परदो लेने परचा दीना, हरबूजी सूँ भेटचा,

"भैरया" करत प्रणाम, धोळे असवारी ने ॥ रणुजे..... ॥7॥

25.कन्हैया तेरी मुरली ने दिवाना कर दिया

खेले - खेले रे छोगाळा होळी रंग फागाँ में, बजे चंग फागाँ में॥

फूलाँ छावत में घाडम्बरिया,

लाल गुलालाँ उडत अंबरियाँ,

अंतर की बोछारां वे रंगीली पागाँ में ॥ होळी..... ॥1॥

सोना रूपाँ री रंग पिचकारियाँ,

भगत खेलावे फाग हरी ने होळियाँ,

माचे केसर कीच रे केसरिया बागाँ में ॥ होळी..... ॥2॥

आधे फागण फूल डोल का लागत हे मेळा,

भावना ले भगत आवे भावुक वे भेळा,

माथे जाड़्यो गळ कंटी केसुल्या तागाँ में ॥ होळी..... ॥3॥

चाँक , मांदळ, ढोल बाजे गेर नाचे गेरिया,

जांजा मजीरा, ढोलक भजन करे "भेरया",

फाग होळी हरजस गावे के ही रागाँ में ॥ होळी..... ॥4॥

26.रणूजा वाळो मारा काळजा री कोर

बजरंग बालो रे मारी काळजा री कोर,

हाक चढे हारिया की आवे बाबो दोड़, संतवाळी डोर ॥

भीड़ चढ्यो रे राजा राम रघुराय के,

सीया जी की खोज करी, लंक पुरी जाय के,

समदरियो कुदिने जाय पकड़ियो चोर ॥ हाँक॥1॥

मेघनाथ बाण मारियो लखन आघात,

जाय बूँटी लायने जीवाय दियो लात,

रात्यूँ ला संजीव, नाहीं होवण दी भोर ॥ हाँक॥2॥

अहिरावणियो लेग्यो करने को काळा,

याद किया राम बाला, पहुँच्या पियाळाँ,

हनुमत के सिवा मेरो कोई नहीं ओर॥3॥

जो जो भगत बाला जगत में हारिया,

बेळू बणी ने बली संकट मूँ तारिया,

"भेरया" के भीड़ माही हनुमत को जोर॥4॥

27.भाबासा री लाडली कटीने चाली रे

ओ अलबेली छेल छबीली बण नकराळी रे,

छम-छम करती भीलणी कटीने चाली रे ॥

सुवा जेसी नाक तिहारी, होट गुलाबी थाराये,

दाड़म जेसा दाँत दीधिया, नेण रंगिला प्यारा ये,

अंग रसीला सूरत मोहनी, लागे बाली रे ॥ छम -छम॥1॥

नागण जेसी चाल पदमणी, नवरंग नार नवेली ये,

क्या हे तेरा नाम भीलणी, क्यों बन फिरे अकेली ये,

हो जा मारी लार सूंदरी, मत फिर ठाली रे ॥2॥

तेरी अदा पर फिदा हे शंकर, ओ मेरी दिल जानीये,

में केलाश वासी राजा थूँ बणजा पटराणी ये,

तीन लोक की हरियाळी का हूँ वनमाळी ये ॥3॥

भँवरी भीलण नाम अन्दाता ओछ जात हमारी ये,

में चालूँ तो थारे संग में, परण्यो माने माटी रे,

घणो अनाड़ी अड़सी लड़सी दे दे गाळी रे ॥4॥

ओछी जात की परवा नाही, में बाबो वनखण्डी ये,

थारो परण्यो कई करेलो पकड़ जाऊँला मुण्डी ये,

वाँने मारयाँ जगत हँसेलो दे दे ताळी रे ॥5॥

थारा घर में जगाँ नही हे, आगे हे दो नारी रे,

पवित्र गंगा दूजी थारे पारवती सी प्यारी रे,

घर में वेलो कळेस हमेसा ठोड़ न खाली रे ॥6॥

पारवती ने पीहर भेजूँ जटा में राखूँ गंगाये,

दोनो थारी दास्याँ वेली थूँ मारी अरधांगी ये,
पारवती थारे पाणी भरसी गंगा नहालीये ॥7॥
पल्लो छोडो मारो सिवजी, मानो बात हमारी रे,
दुनिया में बदनामी होसी, हाँसी होय महारी रे,
दूजी बात मूँ रती न चालूँ पाळी पाळी रे ॥8॥
थें केवो तो भँवरी थारे नंद केसर ले आवूँ ये,
हाती घोड़ा गाडी कन सेज पालकी लावूँ ये,
खांदे माते पीठ कड़्याँ में लूँ नकराळी ये ॥9॥
हाती घोड़ा गाडचाँ माही डर लागे हे भारी रे,
कड़ियाँ माही कमर छबे हे मूँ मुलायम नारी रे,
पीठ ऊपर बेठूँ बाबा मूँ मतवाळी रे ॥10॥
यूँ सुणता ही भोळा सिवजी बण्या आप जट घोड़ी रे,
गोडा टेकने पड़्या गडोळयाँ बेटो मारी जोड़ी ये,
बणी गोरजा भँवरी भीलण वा गरवाळी रे॥11॥
देक गोरजा सिव सरमाया, पारवती रा प्यारा रे,
पगल्या हेटूँ धूळो उडग्यो, दन में दिक्या तारा रे,
पाणी पाणी वेग्या शिव देके घरवाळी रे ॥12॥
कहे गोरजा घणा स्याणा थें भोळा भण्डारी रे,
कामदेव ने जीतण वाळा वारी जाऊँ बलिहारी रे,
कहे "भैरव" महामाया थारी लीला निराळी रे ॥13॥

28.साँवरिया थारी मुरली ने

ओला गोटे-गोटे भांग डळी हरियाळा बागाँ में रे रसियाळा बागाँ में ॥

गेर गुमाळा बड़ल्या केरी गेरी-गेरी हे छायाँ,
बेटा भोळानाथ नागदी महादेव री माया,
कंचन केरी काया वे भगती बेरागा में ॥ रे॥1॥
सिखर तणा सिवालय उपर भगवाँ ध्वज फरुके हे,
सिव रात की सिव पूजा में डेरू डाँक डरूके हे,
ढोल धड़ूके आरतड़्याँ वे हर हर रागाँ में ॥ रे॥2॥
कळ-कळ करती नागदी वा निरमल वेवे पाणी सूँ,
चातक मोर पपिहा बोले, मन हर लेवे बाणी सूँ,
भोळा संकर लहेर लेय पड़िया रेवे नागा में ॥ रे ॥3॥
पंचकुण्ड में नत कोई नहावे ज्याके लिक्या भाग में,
सुण बाग अरू चमन बाग अरू बाबाजी रा बाग में,
सोरत का मेळा में रमें आदे फागाँ में ॥ रे ॥4॥
सिवजी बेटा पाट पीताम्बर संग गोरजा मेया रे,
दुनिया जोड़े हात नाथ के भगत पड़्या हे पेया रे,
दरसण पावे कोई बिरला "भैरव" भागाँ में ॥ रे 5॥

29.बरसी रे बरका बरसी

खमा खमा रे घणी खमा, बजरंग बलधारी ने,
ज्याँके राम बसे हे नेण, भगत भय हारी रे ॥
सीता जी की खबर लेयने लंक जलाने आया,
राम नाम लिक चट्टाना पे, जळ पाकाण तराया,
सिन्धू कूद बंदर सेन, अजब अदकारी ने ॥1॥
मेघनात ने लक्ष्मण जी के शगती बाण जब मारा,

जाय रात में बूँटी लायो द्रोणागिरी ने धारा,
जळायो ढळती रेण, जीवाय ब्रह्मचारी ने ॥2॥
चुरा ले गया राम लकन को अहिरावण पाताळ,
प्याळ तेकी जाय पछाड़ा आप होय विकराळ,
दई रामादळ को चेन, बाँका बळहारी ने ॥3॥
आय राम ने रामत माण्डचो, युद्ध मचायो भारी,
रावण मारी भार उतारी, आय अवध बिहारी,
हे राघव जी ने, चरण बलिहारी ने ॥4॥
ओगणगारी काया मारी दया करो कर मरजी,
चरण की अब सरणा देदो "भैरव" की या अरजी,
सुण आरत मारा वेन, चरण बलिहारी ने ॥5॥

30. धन-धन रामा पीर ने

बाला बजरंगी वीर रे लजिया राकज्यो ॥
हार्या का सुण आज्यो हेला, करत हाक हनुमंत हटीला,
आयने भगाज्यो भीड़ रे ॥ लजिया॥1॥
सिमरूँ थाने साँज सेवरी, मारी अरज सुण करहू न देरी,
मारी तो थाने ही पीर रे ॥ लजिया॥2॥
कलजुग केरो बाजे बायरो, भगताँ ने थारोई सायरो,
आयने बंदवाज्यो धीर रे ॥ लजिया॥3॥
पग-पग ऊपर चूकत चाकर बणिने माप करत हे ठाकर,
थें तो हो निर्मल नीर रे ॥ लजिया॥4॥
दंन्या दारी ओगणगारी काया मारी सरण तिहारी,

नावड़ी लगात दीज्यो तीर रे ॥ लजिया ॥5॥

भरोसो "भैरव" न हे तिहारो अवगुण गारो पण हूँ थारो,

चरण कमल माही सीर रे ॥ लजिया॥6॥

31.दूधा रे रंग धन पूता ने रंग

हरिया के चढे हाके, हेले आवे दोड़, धन-धन कल्याण रंग कल्ला राठोड़॥

हेलो दियो रे थाने मेवाड़ी राणा,

परवाणो भणता ही घुड़ला पलाणा,

चढिया रे बार माथे बंधिया ही मोड़ ॥ धन ॥1॥

चित्तौड़ चढिया ने अड़िया ने लड़िया,

दुसमण री फोजाँ में कुदी ने पड़िया,

झूँक्या रे झूँक्या काका भतीजा री जोड़ ॥ धन॥2॥

मायो देय मावड़ ने वचना पे आविया,

मुण्ड हीन रूण्ड लेय आया रूण्डेळिया,

सूराँ सतियाँ री धरती रळियाणी ठोड़ ॥ धन॥3॥

परगट परच्या दे दीदा उपकारी,

गणी खम्मा खम्मा सेसा अवतारी,

पूना लेवे रे जामी गेमरां री ओड ॥ धन॥4॥

देसाँ परदेसाँ में डाको तिहारो,

सेवग सब सरणे आया देय नंगारो,

किरता गावे रे "भैरव" बामण गुजर गोड़ ॥ धन॥5॥

32.रावण मरयो रे लंका में राजा

थोड़ो जग में जीणो काळजो धड़क-धड़क धड़के,
दरसण दे दिज्यो कल्याण माने पेर के तड़के॥
नाम सुणता कँवर कल्ला को दुसमण बी धड़के,
एकलिंग की धजा धण्या की फोजाँ में फड़के॥1॥
आंगी सोहे अंग ऊपरे, बंध्यो मोढको मुड़के,
गळ माही मोत्याँ री माळा घुड़ला पे चढके ॥2॥
कमर कटारो ढाल ढळकती भालो रळके,
शक्ति हे धारण हाताँ में खाण्डो खड़के ॥3॥
में सुण्यो कल्ला कँवर जी, अरियाँ सूँ अड़के,
पाप्याँ रो परले कर देवे, बादळ ज्यूँ कड़के॥4॥
दुक्याँ रा दोळा काटे, रोग रोग्याँ रो जड़के,
बांजड़िया बाळक्याँ माँगे, पंगल्या में पड़के॥5॥
गामा-गामा गाद्याँ थारी ढोलकियाँ धड़के,
देक चावला कळजुग केरा "भैरया" तो भड़के ॥6॥

33.रामदेव परणावे थें परणो भाटी हरजी

रामजी बुलावे थें आवो बाला वीर जी।।
सिवा इसट रो मंतर बावणियो, घोर निद्रा में लेग्यो अहिरावण,
माका अवध मासूँ ले लीया तीर जी॥ रामजी॥1॥
दुस्ट ले आयो माने तेकी पियाळा, थें कालन के हो महाकाला,
थाँका सिवा रे बाला कीने माकी पीड़ जी ॥ रामजी॥2॥
देवी के आगे माने बली चढावे, माका बालरी माने याद दिलावे,

थाँका सिवा रे बाला कीने माकी पीड़ जी ॥ रामजी॥3॥

राम लखन कठे - कठे रामादळ, कठे भरत सिया जुग ज्यूँ बीते पल,

हनुमंत के बना आज में हाँ अधीर जी ॥ रामजी॥4॥

"भैरव" रे राम हनुमंत रट में, कपि सुमरताँ ही देवी रा मठ में,

रघुवर के चरणन में जाय टेक्यो सिर जी ॥ रामजी॥5॥

34. धूप रे धूँवाडे बेगा आवज्यो

धूकाँ धूप रे धूँवाड़े बेगा आवज्यो,

जोवे-जोवे जातरी बाट रे, दुखिया रा दाता॥ धूकाँ.

अन्दाता नंगारे डाको लागे रावळे,

अन्दाता हेला रे हाके बेगा बावड़े,

घुड़ला सूँ घर दूरा नायरे, वासक का रूप॥ धूकाँ॥1॥

धूकाँ भोपा हजुर्या धूपाँ खेरिया,

दाता गोळया बेळया रे धोकाँ देरिया,

खम्मा खम्मा लागी जे जेकार रे, धूंबा रा धणी॥ धूकाँ॥2॥

सगती चण्डी चेतन हे धूप्या मायने,

अन्दाता अगनी हंपाड़ो धाणिया आयने,

अमल्याँ हुका री मनुहार रे, फोजा रा नायक॥ धूकाँ॥3॥

जामी जमलो जगावाँ थारे जोत रे,

जामी कर रे धाकल रमो चूँतरे,

घूघरा की गहरी घमरोळ रे, ठाणा रा ठाकर॥ धूकाँ॥4॥

अन्दाता जरकस रो जामो अंग सोवणो,

अन्दाता केसरियो पेंचो रंग मोवणो,

छल्ला पे मोत्याँ रो जड़ाव रे, हिन्दवाणी राजा॥ धूकाँ॥5॥

धूकाँ कमरयाँ तलवारा, ढालाँ ढळके,

भुज पे भँवरयो भालो रे हाताँ भळके,

मळके मळके हिया बचेहार, रे सगती रा पायक॥ धूकाँ॥6॥

अन्दाता दुखिया रा दोखा काटो आयने,

अन्दाता रोग्याँ रा रोग काडो जाड़ने,

बांझा ने पालणिया बंधाय रे, "भैरया" रा मालक॥ धूकाँ॥7॥

35. धूप रे धूँवाडे

हालाँ-हालाँ गुराजी रा देस में, अगम भोमा में उगा भाणरे आँतम उजाळा,

चालाँ-चालाँ हीरा रा देस में॥

नज नेम रे नंगाड़े डाको लागियो,

भय भव रो भरम भूत भागियो,

पायो प्रेम ग्यान गुराँ रा छाणरे परा पियाळा॥हालाँ॥1॥

झिळमिळ-झिळमिळ जरोखा जटे राजणो,

अणहद गोका मोका में नोपत गाजणो,

वटे आलम राजारो निसाणरे, उडे धजियाळा॥ हालाँ॥2॥

सुरताँ नुरताँ हजूराँ उबी हाजराँ,

सिदियाँ निदियाँ होकम सादे राजरा,

हुकमा पे चाले चंदा भाण रे, अन्दर बरसाळा॥ हालाँ॥3॥

तिरगुण देवा उतारे अलक आरती,

सन्ध्या सुकमण आ सेजाँ संवारती,

संखा ढुळावे समदाँ आण रे, नंदिया नाळा॥ हालाँ॥4॥

नाचे पातुर चराचर संसारिया,

खम्मा खम्मा करे रे जय जयकारिया,

“भैरिया” रोकर दीनो कलियाण रे, गुरां हरियाळा॥ हालाँ॥5॥

36.कोई रोकिया कोई रोकिया रामापीर ने

भई भलजा गुल मिलजा सतगरू समंद में जी रे,

भई सतगरू समरद रे, मारा समंदिया जी रे,

थूँ हे बरबड़ियो बूंद रे ॥ भई

भई सतगरू साहब रे जीणा पवनिया जी रे,

यूँ भरम भू भूल्यो गोट रे॥ भई॥1॥

भई सतगरू हे सब लिया, धरण धराजी रे,

थूँ हे काँकरियो कणियो रे॥ भई॥2॥

भई सतगरू सूरज हे कोटी किरणिया जी रे,

थूँ असंख्य मूँ एक किरण रे ॥ भई॥3॥

भई सतगरू नदियाँ का जळ ज्यूँ निरमळ रे,

थूँ नाडा रे वाळो नीर रे॥ भई॥4॥

भो भटक्या मेटचा रे सतगरू भेटिया जी रे,

“भैरया तोड़ी भरम की भींत रे॥ भई॥5॥

37.धन बाबाजी धन बाबाजी रे

शनि बाबा जी शनि बाबा जी रे ॥

चाँद ने लाग सूरज ने लागा, लागा नो लक तारा,

सालूँ साल में गरेण गळयो घर ससिया भाण दवार रे॥1॥

नाळ खाळ नदियाँ ने लागा, लागा समंदर सारा,

रतनाकर का गरब गळया, कर दिदा जळ खारा रे॥2॥

रोहित कँवर अन तारा हरिचंद, बिक गये तीनो प्राणी,

बीको पड़ियो हरिया रे मरगट, भरयो डोम घर पाणी रे॥3॥

राम ने लाग लक्ष्मण ने लागा, लागा सीताँ नारी,

चवदा बरस तक वन वन भटक्या, भोगी विपदा सारी रे॥4॥

रावण कुंभकरण ने लागा, लागा लंका नगरी सारी,

हनुमान सा जोदा अड़िया, लंक खाक कर डारी रे॥5॥

कृष्ण चन्द्र ने ऐसा लागा, मणी माते जा राळी,

कोरव खपा पाण्डवाँ ने लागा, जाय हेमाळे गाळी रे॥6॥

लागा राजा भूप भरतारी, जोग फकीरी धारी,

विक्रमादित्य में बको पटकियो, चोरंगिया कर डारी रे॥7॥

मोटा देवा मोटा राजा, माटी हे संग माया,

दीन जाण "भैरया" पे दाता राको छतर छायाँ रे॥8॥

38. धन धन रामा पीर लजिया

समरथ सतगरू आप सरणे राकज्यो, पल-पल सिमरूँ जाप, सरणे राकज्यो॥

सत साहेब हे मारे सहाई, भव सागर में ओर हे नाही,

तुम्ही मायर बाप॥ सरणे॥1॥

भवसागर रो थाह ना आवे, गरुबिना कुण पार लगावे,

मेटो त्रिविध ताप॥ सरणे॥2॥

में अग्यानी मद में फूलाँ, माया के वस होकर भूलाँ,

काटो करमन काप॥सरणे॥3॥

गुराँ ग्यान की घूँटी पिलादो, चोरासी का चक्कर मिदादो,

हरो जनम जनम का पाप॥ सरणे॥4॥

दस दोस ने पमन करादो, पाँच पच्चीस ने मार भगादो,

देय ग्यान री थाप॥ सरणे॥5॥

सेण सबद का देकर बाना, "भैरया" ने लिकदो परवाणा,

अमर पटा पे छाप॥ सरणे॥6॥

39.धन बाबाजी रे

बम भोळा रे बाबा बम बम भोळा रे ॥

जाड़या जरणा पहाड़ाँ माही रहे सदा सिव भोळा,

सोवे निरंजन समसाणा में, संग भूतन का टोळा रे ॥ बम॥1॥

नाग भुजंगी गळ में काळा फण फणकत दे जोला,

अंग भभुतिया रमें राकोड़ी तन बाघाम्बर चोला रे ॥ बम॥2॥

डिमक डिमक डिम डमरू बाज रहे मगन मस्त मोला,

गोट गोट माँ गिरजा देवे, पीवे भंग का गोळा रे ॥ बम॥3॥

पल में संकर निहाल करदे जिसने हरि रस घोला,

रूप भयंकर सिव जब धारे, डगमग त्रिभुवन डोला रे ॥ बम॥4॥

वृसभ सवारी सोभित हे, सिव नंदी गण हे धोळा,

मंगलेश्वर महादेव सरणे "भैरव" भजनिया बोला रे ॥ बम॥5॥

40.काना थारी मुरली ने

आवो आवो जी साँवरिया मारी भाव नगरी, कंचन काया नगरी॥

पाँच तत्व रो देवळ बणियो, सोहनी सीकर मोत्याँ सूँ जड़ियो,

कंचन कळसाँ पे धोळी धजा लहरी॥ कंचन॥1॥

दसों दरवाजा खिड़क्याँ ओका मोका,

कुदरतिया कळा केरा, गोख जरोखा,

अंतरजामी जाणो छो मारा मन री॥ कंचन॥2॥

काडूँ करमां रो कचरो, मंदिर बुहारूँ,

मीटी परमळ रा फूल पाट सवारूँ,

नेम रा दिवळा माही जोताँ जळणी॥ कंचन॥3॥

धूप धूँवाड़ो करूँ ग्यान गुगळ रो,

भाव भगती करो भोग निर्मलो,

अरोगो मनुहाराँ मीटो गाळमा मिसरी॥ कंचन॥4॥

घट में परगट गुराँ मोती उबारूँ,

आरत बाणी सूँ दाता आरती उतारूँ,

अमीरत झरणा की जारी भरी गगरी॥ कंचन॥5॥

अणहद होदा पे नोपतिया गाजे,

जाजां जणकारा जीणी जालरियाँ बाजे,

घंटा घड़ियाला गेरी गेरी बजरी॥ कंचन॥6॥

नेह नेणा रो हार चढाऊँ,

गुराँ पीराँ रा पगल्या मंडाऊँ,

"भैरया" भगती कर ना जाणे लवल्या लगरी॥ कंचन॥7॥

41.धन बाबा जी धन बाबा जी रे

धन गुराजी धन गुराजी रे,

गुराँ पीराँ की जात एक हे, नेणा बरसत नूराँ रे॥

अपने अपने हवारत खातर, हर कोई मानुस जीवे,
बलिहारी वाँ बिरला ने भई, पर हित मातो देवे रे॥1॥
हरिनाम को साँचो धन हे, हरिजन साँचे कोई,
फूलड़ा तो फकिराँ पेड़ चढिया, हमिरा के सिर नाई रे॥2॥
स्वाँस-स्वाँस में आप समावे, ज्यूँ महंदी रंग पाणी,
जिण सासा में सायब भेळा, वाँ सत पुरसाँ री बाणी रे॥3॥
सब घट माही राम बसे भई, खाली घटे ना कोई,
वाँ घट की बलिहारी वीरा, ज्या घट परघट होई रे॥4॥
या धरती का थळा ऊपरे, साँची सतगरू सेणी,
"भैरया" करले निरमल भगती, रख समदा सम सेणी रे॥5॥

42.देवळ रमें जी देवळ रमें

नोपत बाजे जी नोपत बाजे, राम रुणीजा में नोपत गाजे॥
राम सरवर री पाळ कँवराँ री गादी,
धाम धजाबंद अखण्ड समादी,
हाजरा हजूर रामदेव बिराजे॥ राम
मेंवाड़ गोडवाड़ मारवाड़ धावे,
माळवो गुजरात घर घर में मनावे,
बीज रे उजाळी का जमा जागे॥ राम
निर्धन ने धन बाबो पांगा ने पांखा,
बांजा ने बाळक्या देवे, आँदा ने आँक्याँ,
कोडचा रा कोड कटे, पापी लजे॥ राम
ऊँचा - ऊँचा देवरा निसाण फड़के,

ऊंडी उंडी थळियाँ में संक धडुके,

"भैरव" रे जीणी - जीणी झालर बाजे॥ राम

43.उण्डा-उण्डा खादरा में नोपताँ बाजे

ढोल नंगारा नोपत बाजे संख धडुके,

घाटा वाळी के घाटा में मोटी धजा फडुके॥

खरधर खांडे धार खादरा घाटो चढ़के,

जबर जोत ले बेटी जोगण नीचे बड़के॥ ढोल

चक्कर चाले चण्डी थारा च्यार खूँट धड़के,

देसाँ देसाँ डाको थारो केहरिया कड़के॥ ढोल

खळाँ ऊपरे सगती थारो खाण्डो खड़के,

दानवाँ री देवी मइयाँ मुण्डयाँ मड़के॥ ढोल

पाप्याँ केरा बादळ आया छाया अड़के,

कलिकाळ का बायरा में "भैरया" भड़के॥ ढोल

44.थाळी भरने लाई खींचड़ो

राम राके ज्यूँई रेणो भाया, मतना छोडो दायरो,

ढळती मळती छायाँ यातो, हरतो फरतो बायरो॥

रोग बी काटयाँ सूँ कटे, रात बी काटयाँ सूँ कटे,

गेलो बी काटयाँ सूँ कटे, बेमारी काटयाँ सूँ कटे॥

रण बी काटयाँ सूँ कटे, दुक बी काटयाँ सूँ कटे,

बेरी बी काटयाँ सूँ कटे, बको बी काटयाँ सूँ कटे॥

बिन हिम्मत किमत नही ना नर की कटण देक मत कायरो॥ ढळती..... ॥1॥

तन बी चलतो मन बी चलतो, जोबन बी दो दन को यार,

धन बी चलतो दन बी चलतो, ससी भाण चलतो संसार,

दुक बी चलतो सुक बी चलतो, जग जीवन हे जळ की धार,

जीवन हे घाट्याँ को गेलो, कब चडाव तो कब उतार,

आपत में ईस्वर को जेलो, एक हरी को सायरो॥ ढळती.....॥2॥

कदी नाव गाडी तो भई, कदी गाडी में नाव रे,

दिन उगे दोपेर कदी तो, कदी पड़े भई साम रे॥

कदी अमीरी कदी गरीबी, कदी स्वस्त कदी ताव,

कदी सियाळो कदी उनाळो, कदी चोमासो आव॥

च्यार दना को चोमासो भई, कद छायाँ कद तावड़ो॥ ढळती॥3॥

गरीब गेलो गरीब गबरू, गरीब नीर बहा देगा,

गरीब घर की हाय बूरी हे, तुजे नरक में ढो देगा,

गरीब को मतना सता रे भई, गरीब अगर कहीं रो देगा।

गरीब के पाछे कोई खड़ा हे, वो जड़ाँ मूँळ से खो देगा।

हे "भैरव" धुप जायेगो यो आपाँई को आपरो॥ ढळती॥4॥

45.सूती नर आयो रे जंजाळ

सीतां जी दुकड़ो भोग्यो, वेसो कोई ना भोगे जग के माय,

विधाता थारी कलम क्यों नी ए॥

परण्या ने व्या दन च्यार जी, कोई पती संग चाली वनवास। विधाता॥1॥

सहेल्याँ रो छूटचो हेत जी, कोई पिहर रो टूटचो प्रेम। विधाता॥2॥

रावण दुक घणो दियो, पण काई करे इकली वा नार। विधाता॥3॥

आँख्याँ में आँसुड़ा आ गीया, जद पति बोल्या दो अग्नि साख। विधाता॥4॥

राम गये वन में एक बार, पण सीताँ गई वन दो बार। विधाता॥5॥

पारासर कहे प्रभु का नाम ही कोई, कलजुग में भगताँ री नाव। विधाता॥6॥

46.घूमर

नाचे भोळा नाथ, नाचे नंदी गणपत साथ रे,

निरख-निरख ने देके गोरा, मन ही मन हरसात रे॥

डम-डम बाजे डमरू, बाजे नंदी गण को घूघरो,

माता ने नचावे गणपत-2 वाँको उड गयो लूगड़ो। नाचे॥1॥

साँप गोयरा थर-थर काँपे, यो कई उधम मचायो रे,

भोळा तो नाचे भंग का रंग में, वाँको मन घबरायो रे। नाचे॥2॥

नाचत-नाचत जटा बिकर गई गंगा मुण्डे बोली रे,

हात जोड़ यूँ चाँदो बोल्यो, थोड़ा नाचो होले रे॥ नाचे॥3॥

नाचत-नाचत सुद बुद भूल्या, बीत्या बरस हजार रे,

तीन लोक का स्वामी विष्णु, गळ पहरायो हार रे॥ नाचे॥4॥

भूताँ रो भगवान यो तो, ईने कई ठा रे-2,

पारासर ले नाम हरी को, फिर थने डर काँ रे। नाचे॥5॥

47.त्रिलोकी को नाथ जाट के बणग्यो हाळी रे

त्रिलोकी को नाथ जाट के बणग्यो हाळी रे...

भोळे नाथ भगवान, महिमा थाँकी न्यारी रे,

माँ गोराँ के काम भेस, मोची को धारी रे॥

हेमाचळ में जाय रचायो, सिवजी माया बजार रे,

रत्न जड़ी मोजड़ीयाँ बेंचे, मोत्याँ जड़ी लक च्यार रे,

देक मोजड़ी गोराँ हरसी, मन मन में भारी रे। माँ गोराँ॥1॥

खूब अनोकी थारी मोजड़्याँ, कर बणजारा भाव रे,

भोळा नाथ ने मूँ दिकास्यूँ, मन में घणो उमाव रे,

मोत्याँ जड़ी को मोल बता दे, लागे घणी प्यारी रे। माँ गोराँ॥2॥

मोत्याँ जड़ी अनमोल मोजड़ी, पेरे घर की नार रे,

सब सूँ बाली चीज देवो तो, में बेंचण ने त्यार रे,

मारो मनड़ो मोयो अंगुटी, हात में थारी रे। माँ गोरा॥3॥

हात अंगुटी जान सूँ बाली, दी सिवजी सोगत रे,

घर जाता ही सिवजी पूँछे, कई बणउंला बात रे,

ले ले नोलक हार मान जा, बात हमारी रे। माँ गोरा॥4॥

छलना में आ गई गोरजा, दे दी अंगुटी प्यारी रे,

लेय अंगुटी सिवजी चाल्या, लीला समेटी सारी रे,

आय सिंहासण ब्याव में बेटचा, लीलाधारी रे। माँ गोरा॥5॥

संकर पूँछे कठे गोरजा, मारी अंगुटी प्यारी रे,

पूनम चंद माँ गोरा देकी, हात में सिवजी प्यारी रे,

मन ही मन में समझी गोरा, बाताँ गोरा सारी रे। माँ गोरा॥4॥

48.सतगरू माँ सूँ मिलता जाज्यो जी

सतगरू माँ सूँ मिलता जाज्यो जी ...

ओ झालर संख नंगारा बाजे जी, उपरमाळ का मंगरा माही जोगण गाजे जी॥

तुँही हे जगदम्ब ज्वाळा, उमा, रमा, ब्रह्माणी,

तुँही हे धनोप सीतळा, महिमा वेद बकाणी,

थारी जोत जग में सवाई जी । उपरमाळ॥1॥

तुँही हे चावण्ड चरताळी, सकळ आद भवानी,
तुँही हे काळीका किल्ले वाळी, तुँही जातळा राणी,
महिमा वेद सास्त्र सब गावे जी। उपरमाळ॥2॥
तुँही आवरा भरका चण्डी, तुँही एळवा राणी,
तुँही उंटाळा भादू चण्डी, रावण वंस खपाणी,
सगती आप रूप बिराजे जी। उपरमाळ॥3॥
तुँही लाला फूलाँ मेया, द्रोपदी नार कहाई,
तुँही हेमंत बणी ज्वाळा, धरम धजा फेराई,
कानुड़ो गुण जस थारो गावे जी। उपरमाळ॥4॥

49.ओ मोवन मुरली मण्डप्ये बजाई रे

ओ मोवन मुरली मण्डप्ये बजाई रे,
छोडचो सब ही काज रास रमबा ने आई रे॥
सुण कर मुरली मोवनी मारो मनड़ो मस्त वेग्यो,
परण्यो उबो फेरा मायने, हेला पाड़तो रेतो रेग्यो,
ओपाणी पाणत करती आई रे। छडचो॥1॥
केसी मुरली मोवनी मारी, सुद बुद भी भुल्याई,
नानो बाळक रोवतो में घर पर ही छोडचाई,
लूगड़ो बिन ओडचाँ में आई रे। छोडचो॥2॥
मुरली की धुन सुणके साँवरा, सिव समाधी खोली,
वेद बाँचता रुक्या ब्रह्मा, ईन्द्र समादी खोली,
अंग पर गंगा अंगियाँ दरसाई रे। छोडचो॥3॥
मीटी - मीटी बाजे मुरली, राधा नाचे संग में,

जगदीस चरणा को चाकर, रंगियो थारा रंग में,

थारा चरणा में चितलाई जी। छोडयो॥4॥

50.राग–सोरठ

ओजी मारो मोवन मुरली वाळो रे, ठाडो जमना जी री तीर रे।

गंगा थूँ सुहावणी, निरमल थारो नीर,

पणिहारयाँ पाणी भरे रे, ओढण दकळो चीर,

ओजी माने घड़ो ऊँचाता जाज्यो रे, कान्हा जमना जी री तीर। ओजी॥1॥

हात चढयो पग पावड़ी, गज-गज लम्ब केस,

कई बगत द्वार पे ठाडो, कर जोगी को भेस,

ओई माने चरण मनल में राको रे, कान्हा जमना जी री तीर। ओजी॥2॥

बरसाणो दूरो घणो रे, माँ सूँ चलियो न जाय,

किज्यो कृष्ण मुरारी ने रे माने गोद्याँ में ले जाय,

ओजी माने भूडे भांगड़े मोई रे, कान्हा जमना जी री तीर। ओजी॥3॥

किण राजा री लाडली रे, कई थारो नाम,

वृसभान की लाडली रे, राधा मारो नाम,

ओजी माने घड़ी - घड़ी कई पूँछो रे, कान्हा जमना जी री तीर। ॥4॥

चन्द्र सखी री बीणती रे, सुणज्यो करसण मुरार,

करपा कीज्यो दरसण दिज्यो, राधा रा भरतार,

ओ जी माने चरण कमल में राको रे, कान्हा जमना जी री तीर। ॥5॥

51.पायो जी मेने राम रतन धन पायो

पायो जी मेने राम रतन धन पायो॥

वस्तु अमोलक दी मारा सतगरू,

करपा कर अपनायो ॥1॥

जनम-जनम की पूँजी पाई,

जग में सब सवायो॥2॥

कायो न खरचे चोर न ले जावे,

दिन-दिन बढत सवायो॥3॥

सहज के नाव खेवटिया सतगरू,

भव सागर तर आयो॥4॥

मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,

हरक-हरक गुण गायो॥5॥

52.सतगरू दरसण देता जाज्यो

तर्ज – सतगरू दरसण देता जाज्यो...

मीराँ विस का प्याला ने पी गई रे,

हरि नाम की डोर पकड़ मीराँ पार उतर गी रे॥

राणो मीराँ पे कोपियो, लादी कमर कटार,

आँक खोल वो देकण लागो, मीराँ बणगी अपार। हरी॥1॥

पगाँ बाजे गूगरा वो, हाताँ मरदंग ताळा,

ओ मुख सूँ बजावे बाँसुरी, वो गावे मदन गोपाळ,

अरे स्याम सुन्दर रंग रचगी रे। हरि॥2॥

मीराँ वन की बेलड़ी, राणो मन को ठूँठ,

ओ समझायो समझे नहीं, थने ले जाती वेकुण्ट,

मन में ध्यान हरी को धर गई रे। हरि॥3॥

विस को प्यालो भेज्यो राणे, दिदो मीराँ के हात,

कर चरणामत पी गई मीराँ, थें जाणो रघुनात,

वा घट-घट पेट में पी गई रे। हरि॥4॥

बागाँ बोली कोयलाँ, मंगरे बोल्यो मोर,

ओ मीराँ ने साँवरियो मिलग्यो, मिलग्यो नंद किसोर,

वा तो राम नाम रस पी गई रे। हरि॥5॥

53.में तो देक्यायो रे गडबोर

तर्ज – में तो देक्यायो रे गडबोर...

में तो दोड़ी - दोड़ी मंदरिया में जाय, गोविन्द गुण गाऊँ रे॥

हार श्रंगार राणा मारे नहीं छावे,

में तो कंटी माळा लेऊँ हात। गोविन्द... ॥1॥

कुटम कबिलो राणा मारे नहीं छावे,

मूँ तो ले संताँ रो हाथ। गोविन्द... ॥2॥

साल दुसाला मारे काम नी आवे,

मूँ तो धर भगवाँ रो वेस। गोविन्द ... ॥3॥

मेल झरोका मारे नही छावे,

मूँ तो हरी का मन्दर में बेटूँ। गोविन्द... ॥4॥

मीराँ बाई ने रटन लगाई,

बदरी लाल ने कत कर गाई,

मारी करज्यो नेया पार। गोविन्द... ॥5॥

54.मेंदी लागी मारा हाताँ में

माँ अम्बा माराणी ए, तीन लोक धरीयाणी हे,

मोटो हे थारो नाम, माँ जगदम्बा॥

चोंसट जोगण्याँ जी अम्बा थारो ही जस गावे,

काळा गोरा भेरूँ अम्बा, थारे चँवर ढुळावे,

ढाल हे थारा हाताँ में, काळी अन्दारी राताँ में,

जगदम्बा करो उद्धार, माँ जगदम्बा। माँ अम्बा... ॥1॥

देवासुर संगराम हुयो जद, आई विपदा भारी,

असुराँ ने संगारण खातर, सिव सगती अवतारी,

सुम्भ निसुम्भ संगारयो माँ, माहिसासुर ने मारयो हे,

गुंजी हे जे - जेकार, माँ जगदम्बा। माँ अम्बा... ॥2॥

मनड़ो मारो केवे अम्बा, पायल में बण जाऊँ,

पायलड़ी बण जाऊँ, थारे चरणा में रम जाऊँ,

बिंदियाँ सोवे माता में, चुड़लो थारे हाताँ में,

बण जाऊँ बाजुबन्द, माँ जगदम्बा। माँ अम्बा... ॥3॥

माँ अम्बा सेवग थारा, निसदिन दरसण पावे,

दास पड़्यो चरणा में थारे, घणो ही सुक पावे,

थारी महिमा गावे हे, जे जेकार हुणावे,

अब राको सब की लाज, माँ जगदम्बा। माँ अम्बा... ॥4॥

55.लावणी

जंगी तो जगत में परगटी आवरा ये, जरणी जननी जनम सुदार-2,

राठोड़ा कुळ मझधार, लिन्हो अवतार... ॥

मंदर बण्यो बीच पहाड़ में जी, सोबा लागे अपरम्पार -2,
सनमुख तळाव लम्बी पाळ, पिछवाड़े बजार। जंगी... ॥1॥
स्याम मूरत लागे सुहावणी जी, सुन्दर पुस्पों का हणगार -2,
साड़ी सुरंगी लप्पेदार, जड़िया जरकस तार। जंगी॥2॥
स्वर्ण मुकुट सोवे सीस पे जी, मस्तक मोतियन माळ-2,
कुरती जड़ाऊ ठप्पेदार, गळे बीच हार। जंगी॥3॥
संत सेया पे विसणू बोलिया, ब्रह्मा चारो वेद उचार-2,
धरे हे ध्यान त्रीपुरार, माता के दरबार। जंगी॥4॥
बावन भेरव चोंसट जोगणिया, गावे निसदिन मंगळाचार,
करे वंदना दरबार, सृष्टि के नरनार। जंगी॥5॥
नार धडुके बोले मोरिया जी, छेड़े कोयल राग मल्हार-2,
नोपत झालर बाजे द्वार, जालर की झणकार। जंगी॥6॥
दुखिया का दुखड़ा पल में मेटे, दुरगा दया की दृष्टि निहार-2,
मस्त प्राणी के प्राण उबार, नाव मझधार। जंगी॥7॥
जब-जब भीड़ पड़े भगताँ पे जी, चण्डी चला चक्र हर बार-2,
कर में खड़ग खप्पर धार, हरे कष्ट अपार। जंगी॥8॥
बगत बदरी चेन राम के जी, सिव सगती को आधार-2
नाना, सम्भु, बंसीलाल, गावे बारम्बार। जंगी॥9॥

56.सतगरू आया मारे

सतगरु आया मारे रिदी सिदी लाया मारा
भर्या तो भण्डारा रेसी जी वा माने
सन्त मल्या उपदेसी।टेर।

घी रे खाण्ड रा अमरत भोजन

मारा सतगरु कलेवा करसी जी वो माने

सन्त मल्या उपदेसी।१।

इणरे काया मे सन्तो अमरत कुआ

मारा सतगरु हिलोला लेसी जी वो माने

सन्त मल्या उपदेसी।२।

कोयल जस्यो रंग कागा रो

बीने तो कोयल कुण कहसी जी वो माने

सन्त मल्या उपदेसी।३।

कहत कबीर सुणो भाई सादु

या तो टेक भेक की रहसी जी वो म्हाने

सन्त मल्या उपदेसी।४।

57.मारा राम रघुनात इतना सा तो

मारा सतगरु दीनानात, मारा सतगरु दीनानात।

सरण पडचा हम थारा दाता, फेरो हम पर हात।

गरु सेवा अरु गरु चरण पे, माके परति विसवास।

अटे तो सुक सम्पति पावे, सबी जगा सुक बास॥

देता सतगरु बीने सात।१।

राम नाम तो जाज समाना, थे गरु खेवट हार।

दरढ़ विसवास करे जो मन में बेड़ो पार।

नहीं फिर छोड़े वाँको सात।२।

आगे पाछे ध्यान धरबऊँ, माया जग दुकदई।

'रुड़मल' मन गरु चरण मे लगा रो सुकदई।

छोड़ सब कुसंग को सात।३।

58.सिव स्याम बिना दुक कुण हरे

भोले नात बना दुक कुण हरे।टेर।

बरसा बना सागर कुण भरे, माता बिन आदर कुण करे।१।

रीत भरे भरया ढळकावे, मेहर करे जब फेर भरे।२।

हांप सिंगार गले मुण्ड माला, मस्तक उपर चन्द्र धरे।३।

नील कण्ट हो बम बम तुम, ओर जटा में गंगा लहर करे।४।

बावन भेरु चोसट जोगण्या, सिवाजी के आगे निरत करे।५।

रुड़ भक्त पर करपा करज्यो, जो सिवजी के चरणा में ध्यान धरे।६।

59.संकर रम रहा रे पाड़ामे

संकर रम रहा रे पाड़ामे, गोरां पारवती के संग॥टेर॥

गोरे गोरे तन पर भस्म विराजे,-२

जटा जूट में गंगा॥१॥

बोल की पतियां प्यारी प्यारी लागे,-२

चढ़े हे चन्दन रंग॥२॥

आग धतुरा भोग लगत हे,-२

भर भर लोटा भंग॥३॥

नन्दीसवर असवारी सोहे,-२

भूत परेत लिए संग॥४॥

दास रुड़मल सरण आपकी,-२

लगा नित नया रंग॥५॥

60.नन्द बाबा न कह दीज्यो रे

गोकुल का कांकड़ पर कानू धेनू चरावे रे।टेर।

काळी काळी कामली रे घूघी घेर घुमेर।

केसरयां फुंदा लटके छे वींके च्यारो मेर।

यो तो बाल सका संग आवे रे।१।

जमनाजी के ईराँ तीरां जावे जी नन्द गांव।

आगे मिलगो कृष्ण कन्हेया पूछण लाग्यो नांव।

यो तो घूंघट ने खुलवावे रे।२।

गढ़ मतुरा की गुजरी जी, दही बेचबा जाय।

आगे मिलग्यो कृष्ण कन्हयो, लूट खोस खा जाय।

यो तो लूटा खोस मचावे रे।३।

बाळपणा में भूतणी जी देकी गोकल मांय।

मामा कंससेती सब मारया देर करी वो नांय।

ये तो सोटम सोट मचावे रे।४।

दुसट रागसस नीच कुकरमी, सब ने कानू मारया।

चन्द्रसकी भज बाल कृष्ण छबि, सबका कारज सारया॥

यो तो सत की राय बतावे रे।५।

61.पाणिड़ो भरबा दे

भरबा देरे नन्दजी रा लाल, पाणिड़ो भरबा दे।टेर।

तू मत जाण काना मने रे एकली २

मारी संग में सहेल्यां रो सात।१ ।पाणिड़ो.....।

आमर में चमके बिजळी रे काना २

यो बरसे जळ मूसळादार।२ ।पाणिड़ो.....।

सुसरो मारो चोधरी रे काना २

या सासु बड़ी होस्यार।३ ।पाणिड़ो.....।

परण्यो मारो बाळक रे काना २

मारो जेट बड़ो थाणादार रे।४ ।पाणिड़ो.....।

चन्द्र सकी की विनती रे काना २

थारा चरणा पर बलिहार।५ ।पाणिड़ो.....।

62.मीरां को जाग्यायो बेराग हरि का रंग में

हरि का रंग में रे, सादा रा संग में।टेर।

जहर पियालो राणो भेज्यो दयो मीरा के हात।

कर चरणामत पी गई जी, सहाय करी रघुनात।१।

सरप पिटारो राणो भज्यो दयो मीरां न जार।

खोल पिटारो देकण लागी बन गयो नोसर हार।२।

सेर जंगळ का ल्याय के जी, भेज्यो मीरां पास।

गाय बन गई दरसनी जी, चरबा लागगी घास।३।

सादु आया सहर में जी, मीरां सुणी अवाज।

तन मन सू सेवा करे जी, हरि मिलन के काज।४।

63.फागण का दन च्यार

बिन कर ताल पखावज बाजे।

अनहद की झनकार।१।

बिन सुर राग छतीसों बाजत।

रोम रोम रंग सार।२।

सील सन्तोस की केसर घोली।

परेम प्रीति पिचकार।३।

उड़त गुलाल लाल भयो अम्बर।

बरसत रंग अपार।४।

घट के पट सब खोल दिये हे।

लोक लाज सब डार।५।

होळी खेल पीव घर आये।

सोई परेम पियार।६।

मीरां के परबु गिरदर नागर।

चरण कमल बलिहार।७।

64.आज मारी सेल्या प्यासी रे

दरसण दो घनस्याम आज मारी सेल्या प्यासी रे।

मन मन्दिर में जोत जगादो, घट घट वासी रे।टेर।

मन्दिर मन्दिर मूरत तेरी, फिर भी ना दीखे सूरत तेरी।

युग बिते नहीं आई मिलन की पुर्णमासी रे।१।

द्वार दया का जब तू खोले, पंचम सवर में गूंगा बोले।

अन्दा के हो आक कि लंगड़ा पहुचे कासी रे।२।

पाणी पीन प्यास बुजावे, नैनन ने कस्यान हमजावे।

आक मिचन छोड़ की अब, तो गोकल बासी रे।३।

आवो मोवन जलदी आवो पापी मन को धीर बन्दाओ।

रेन दिवस तुम बिन तड़फत हे मीरां दासी रे।४।

65.राम थारी नगरी में काँई घाटो।

करमा का हस्याब मूँ मले रे बांटो।टेर।

कुई न मिले हे लाडू बरपी,

कोई न मिले छे सूको आटो।१।

कुई के तो हे भाई महल मालवा,

कुई के कड़ब को छे रे टाटो।२।

कुई तो ओढ़े भाई साल दुसाला,

कुई न मिले छे चादर फाटो।३।

ग्यान दास गरु मल्या रे पुरा,

श्री राम नाम को रोड़ो लाटो।४।

66.बटेऊ आयो लेबा ने

मेने अबके बचाले मेरी माय, बटेऊ आयो लेबा ने।टेर।

आट कोटड़ी दस दरवाजा, ई काया के माँय।

लुकती छिपती में रहुंजी फिर भी यो छोड़े नांय।१।

कहे डोकरी सुणो पावणा, थे तो मारी बात।

कन्या मारी भोळी भाळी, भेजु न थाँकी लार।२।

कहे पावणा सुण ये बुढ़िया या छे सांची बात।

यम राज को हुक्म हुवो, छोडू न ढलती मांझळ रात।३।

पांच भाया की बेन लाडली, तीजां को रे तेवार।

कहत कबीर बटेऊ लोगो, कुई न गया रे बींकी लार।४।

67.डर लागे हांसी आवे

असो अजब जमानो आयोजी, डर लागे हांसी आवे।टेर।

असो अजब जमानो आयोजी, डर लागे हांसी आवे।टेर।

धन दोलत ले माल खजाना वेस्यां नाच नचायो।

मुटी भर अन्न सादु मांगे, कहे नाज घरां नही आयो।१।

कता होय तो सरोता सोवे, बकता मुंड पचावे।

होय जहां कोई स्वांग तमासा, जरा नींद न आवे।२।

भंग तमाकू सुलफा गाँजा, सुखा खूब उड़ावे।

गरु चरणा में मन नहीं धारे, विरता जनम गवांवे।३।

उलटी चलन चली दुन्या मे तासु जीव घबरावे।

कहत कबीर सुनो भाई सादो, राम नाम नहीं भावे।४।

68.ठगणी कई नेना चमकावे

ठगणी कई नेना चमकावे, कबिरो थारे हात ने आवे।टेर।

रुप पहन कर रुप दिकाया, सोना पहन तरसाया।

गले डाल तुलसां की माळा, तीन लोक भरमाया।१।

कद्दू काट मृदंग बनाया, नींबु काट मंजीरा।

पाँच तुरई मंगळ गावे, नाचत बालम खीरा।२।

भेंस पदमनी आसिक चूहा, मेढ़क ताळ लगावे।

छप्पर छडन गदेड़ा नाचे, ऊँट विष्णु पद गावे।३।

आम की डाळळी ऊन्दरा तोड़े, ताली चुन चुन लावे।

कहत कबीर सुणो भाई सादो, बागल भोग लगाव।४।

69.हुई सफल कमई महाराज

हुई सफल कमई महाराज भरथरी थारी भरथरी थारी।

मालिक के कारण जोग फकीरी धारी।टेर।

ईसवर.....।

राजा हुतो महल के मांही, तृष्णा जागी तृष्णा जागी।

जाने मिल गये गोरकनात, भरमना भागी।१।

राजा गयो जंगळ के माही, दे रहयो हेला दे रहयो हेला।

जाने मिल गया गोरकनात, मूण्ड लिया चेला।२।

राजा जाओ सहर के माँही, दे ल्याओ फेरी दे ल्याओ फेरी।

पिंगला न किहज्यो मत करो मत देरी।३।

राजा गयो महल के माही, दे रहयो फेरी, दे रहयो फेरी।

भिगसा घालो पिंगला मत करो मत देरी।४।

राणी खड़ी महल के मांही लटेया तोड़े।

राजा एक दन पकड़्यो हात परीत मत तोड़े।५।

हे सई सीकर के बीच सांकड़ी सेरी।

ज्याने गाबे झरणानात भजन का लहरी।६।

70.देका रे भाया कस्यान नट जावलो

पल में टिकट थारों कट जायलो।टेर।

जब तक थारा चरका चाले, हात पग थारा जटा तक हाले।

हलतो हलतो हल जायलो।१।

दो दन की बन्दा रुप जवानी, ढळती छाया बेतो पाणी।

ढळतो ढळतो ढळ जावेलो।२।

मोत मलई अबई आवे, खड़की खोल जपट ले जावे।

काल बली थने गिट जायलो।३।

कहत कबीर सुणो जग वालो, परबु चरणो में नेह लगालो।

चित चरणा में रह जायलो।४।

71.खबर ने एक घड़ी पलकी

खबर ने एक घड़ी पलकी, खबर ने एक घड़ी पलकी।

श्री राम नाम को समरण करले, कुण जाण कल की।टेर।

भूंद्दा तीतर राजा नल का उड़गा, आई घड़ी दुक की।

माँ बाप की सेवा सरवण किदी, बिपत पड़ी बन की।१।

सहस्त्र पुत्र राजा सुघड़ के होगा नव नीव झलकी।

फिरगी मनोहर म्हारा आलम धणी की धरण आर रल की।२।

धरव के हेत राम से लाग्यो, सुरत धरी बनकी।

बेकुण्ठ मे मल्यो अमर पद पूरण भई मन की।३।

कई देव सिर रावण, को नते टूटी थी उनकी।

तीन बात नहीं पूरी कीनी, थी उनके मन की।४।

कहत कबीर सुणो भई सादो, उतपति हे जळ की।

चित बेरागी दो चेला करल्यो, सूरत धरो हर की।५।

72.पशु के समान

भजन बना रहे गयो रे पसु के समान।

पशु के समान बन्दा बेल के समान।टेर।

पांव दिया रे थने तीरत करबा ने बन्दा।

हात दिया रे कर दान।१।

दांत दिया रे बन्दा मुकड़ा की सोबा,

जीब दिई रे कर गान।२।

आंक दि रे बन्दा मारग दरस को,

कान दियां रे सुण ग्यान।३।

कहत कबीर सुणो भई सादो,

कर देही का रे उत्थान।४।

73.मुझे बी कृष्ण प्यारो हे

नही कई काम दन्या मूँ, मुझे बी कृष्ण प्यारो हे।

यसोदा नन्द का नन्दन, मेरे नयनो का तारा हे।टेर।

बजई बंसुरी लाला, कलेजा छील डारा हे।

गये जब आप मतुरा को वहा जा कंस मारा।१।

उठा उंगली पर गिरवर को इन्द्र का मान मारा हे।

तू ही दाता तू ही माता, तू बन्धु हमारा हे।२।

तू ही इस देस का मालिक, मुझे तेरा सहारा हे।

कहे हरिदास कर जोड़े, सदा सेवक तुमारा हे।३।

74.बीणजारी

बिणजारी ये नेन उगाड़, टांडो थारो लद जा सी।

बिणजारी ये भजन में बेट टांडो थारो लद जा सी।टेर।

टांडो थारो लद चल्यो ये, तू विरहन रही सोय।

जब जागी तब एकली ये, नेन गमाय दिया रोय।१।

जनम मरण में लाको सीर, ये तेरा जनम राजाजी लेत।

एक सीस तूने ना दिया ये नारायण के हेत।२।

सिर माँटी का तोबरा ये साँची करके जान।

सिर के साटे हर मिले ये, तो भी सस्ता जान।३।

कहत कबीर सुनो केसवजी, तेरी गती अपार।

जिन लाद्दा हरिनाम पर जी, जो सब उतरया पार।४।

75.कर्मा की रेखा

करमा की रेका न्यारी विधाता टाळी नहीं टरे।टेर।

लक घोड़ा लक पालकी जी ऊपर छन्न फिरे।

हरिसचन्द से दानी राजा, नीच घर नीर भरे।१।

सरवण जेसे मरगे बन में बली पाताल धरे।

नल राज से दानी कहिये, किरकट जुण परे।२।

पांडू सुत के आप सारती, जामे विपत परे।

दुर्वासा पे साप दिवा के, यदुकुल नास करे।३।

गरु वसिस्ट से पण्डित ग्यानी, सोंध के लगन धरे।

सीया का हरण मरण दसरत का, बन बन राम फरे।४।

कहां फांसी कहां पारधीजी, मिरगा माल चरे।

कई धरती का टोटा पड़गा, फन्द में आन परे।५।

पड़ी रहत अहार बिन अजगर, पंछी उदर भरे।

अति प्रचण्ड तेल बल जामें, केहरि भूख मरे।६।

तीन लोक भावी के बस हे, भावी वस न परे।

तुळसीदास होनी सो होवे, मूरक सोच करे।७।

76.नाव

मारी छोटी सी हे नाव, थारा जादू भर्या पग।

डर लागे मोहे राम, केसे बिटाऊ तोहे नाव पे।टेर।

जब पत्थर से बन गई नारी, ये तो लकड़ी की नाव हमारी

तोड़ - करु यही रोजगार, पालू सभी परिवार

सुणो सुणो जी दातार। केसे.....।१।

इक बात मानो तो बिठालू, तेरे चरणो की धूल लगालूँ।

तोड़ - मेरा सन्देह हो जाय दूर, अपार तुम्हे हो मंजूर।

सुणो सुणो जी हजूर।केसे.....।२।

बड़े परेम से चरणा ने धोये, पाप जनम जनम के खोये।

तोड़ - हुए बड़े ही परसण, किदा राम का दरसण।

संग सिया लसमण। केसे.....।३।

चरणामृत सबको पिलाऊं, थाँने भेंट मे फुल छढ़ाऊ।

तोड़ - ऐसा समय बार बार, आता नहीं सरकार,

सुणो सुणो तारणहार। केसे.....।४।

धीरे धीरे से नाव चलाता, वह तो गीत खुसी के गाता।

तोड़ - कहता मन में यही बात, नहीं होनी चाहिए रात।

सुरज सुनलो मेरी बात।केसे.....।५।

लेलो लेलो मल्लाह उतराई, मेरे पल्ले नही कुछ पाई।

तोड़ - यह तो करो स्वीकार, तेरा होगा बेड़ा पार।

तेरी होगी जे जे कार। केसे.....।६।

जेसे तुम हो खेवटिया वेसे हम हे।

भई भई ले लेना सरम हे।

तोड़ - मेने नेया की पार, करना भव से तुम भी पार।

परमानन्द की पुकार। केसे.....।७।

77.धमाल

ओसर आगो रे कर सुमरण मनको धोले धागो रे।टेर।

मदिरा मांस में भ्रमत डोले, जगत बतावे कागो रे।

कुकर्मा न छोड़ चाल गरु चरणा लागो रे ।१।

मोह माया में क्यो उळझणो छे यो काबो धागो रे।

छुट जाय जद काम न आवे जासी नागो रे।२।

चोरासी में भ्रमत डोले खोटो कीनो सागो रे।

असो कोइ गफलत में सोगो अब तो जागो रे।३।

आलस छोड़ उट'न तू तो भगती मांही लागो रे।

परमानन्द पेचाण हरि ने दुविदा त्यागो रे।४।

78.काया नगरी

थारी काया नगरी में रे परदेसी पिया बोले।टेर।

पिया को ढूंढन चली दिवानी बन बन ढूंढत डोले।

कासी मतुरा सब जग ढूंढा, पांवो में पड़े फफोले।१।

इंगला पिंगला सहज पिछाणी, सुखमण घाल हिंडोले।

घट मे पिया की सेज बिछाकर, बेया घालकर सोले।२।

सुरत निरत की खोल किवाड़ी, ग्यान का दिपक जोले।

सच्चा सांई मिल जावे जब, घट का पर्दा खोले।३।

जे थारा मन में पिया मिलन की सतगरु की तू होले।

कहत कबीर सुणो भई सादो, दिल का पाप न धोले।४।

79.नसा में चूर मत रहज्यो रे

जग में हगरा चोर फिरे छ: डावा रहज्यो रे।टेर।

पांच चोर काया में पड़गा खुब मचई धुम।

चोड़े धाड़े रात बिरत ये झट जावे छे लुम।१।

एक चोरटी हात बड़ी छवाई दुक की मूल।

रिसी मुन्यां की हरदा ताणी पहुंचा दीनी सूल।२।

नानग मार्या तुळसी मार्या मार्या दास कबीर।

सुरदास कळजुग मे मार्या, मीराँ बई धर धीर।३।

बापू गांधी मार्या थोड़ा, संत विनोबा जारी।

चोटा गाडा मरे म मार्या चोटी चोड़ खारी।४।

राम नाम को मुगदर करल्यो, हरदा की तलवार।

गरु सेवा की ताकत करले, एक समचे मार।५।

माया नार खोड़ली आटे, भगति करल्यो फरसी।

गरु करपा ते कहे रुड़मल, परे खड़ी या डरसी।६।

80.प्यारा कानूड़ा

थारी भारी-भारी मन में आवे प्यारा कानूड़ा।

पण आव प्यारा कानूड़ा अब रास तो रचाजा रे।टेर।

रास भी रचाजा काना नाच भी चराजा,

पण गीता जी को ग्यान हुणाजा प्यारा कानूड़ा।१।

गायाँ बी चराजा काना बछिया भी चराजा,

पण जमुना तट पर बंसरी हुणाजा प्यारा कानूड़ा।२।

फाग भी रचाजा काना, होली भी रचाजा,

पण बरसाणा का रसिया, सुणाजा प्यारा कानूड़ा।३।

भगता ने उबारया थे तो सादा ने उबारया,

पण रुड़मल की विनती अब तो सुणले प्यारा कानूड़ा।४।

81.परबुजी को पतो बताओ

परबुजी को पतो बताओ, या सतगरु थासू अरजी।टेर।

ना मथुरा में ना कासी मे २, ये काम बण्या सब फरजी।१।

ना मन्दर में ना मस्जिद २, ये मोला पंडित सब गरजी।२।

ना जंगळ मे ने सेर मे २, नाहीं पाड़ में डरजी।३।

थारी काया मे साहिब राजे २, पाया भेद बिरला नरजी।४।

सच्चे मन से जो जपता हे २, दरसण देते हे हरजी।५।

दास रुड़मल अरज गुजारी २, हुई सतगरु की मरजी।६।

82.धमाल लीला

कोने माने ए जसोदा थारो गिरधारी

कोने माने ए-२.....।टेर।

घर का तो छोड़्या कानो महल ए मालवा-२

अरे - इने गुजरी की झोपड़ी लगे प्यारी।१।

घर की तो छोड़ी ए कानो माकन मिसरी-२

अरे - इने गुजरी की राबड़ी लागे प्यारी।२।

घर की तो छोड़ी कानो रादा ए रुकमण-२

अरे - इने तो गुजरी की छोकरी लागे ए प्यारी।३।

घर का तो छोड़्या कानो कुआ ए बावड़ी-२

अरे - इने गुजरी की नाड़िया लगे ए प्यारी।४।

घर का तो छोड़्या ए कानो सोड़ ए सोड़िया-२

अरे - इने गुजरी की गुदड़ी लगे ए प्यारी।५।

रुड़मल ने भाव श्री कृष्ण जी की झांकी-२

अरे - ईकी मीटी-मीटी बांसुरी लगे ए प्यारी।६।

83.बावड़ी का बालाजी

थारो बेड़ो लग जाय पार, भज मन गोविन्दा।टेर।

मीरां की लगगी, नरसी की लगगी-२

तोड़-दियो पहलाद ने भी त्यार।१।

नानण की लगगी, तुळसी की लगगी-२

तोड़-किया सुरदास ने भी पार ।२।

बिना बीज धन्ना भगत की लगगी-२

तोड़-करमां को खीचड़ो खार।३।

रक्कां बक्कां सवरी लगगी-२

तोड़-दिया सदन कसाई ने त्यार ।४।

धरव भक्त दरोपदी की लगगी-२

तोड़-लियो अटल अमर पद धार ।५।

भक्त विभीसण सुग्रीव की लगगी-२

तोड़-दीयी त्यार अहिल्या नार।६।

दास सुदामा कबीर की लगगी-२

तोड़-लीयी रुड़मल ने भी ध्यार।७।

84.रामधुनी

रघुपति राघव राजाराम । पतित पावन सीताराम।

सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम।टेर।

आरती हो सब भक्त पुकारे। आकर सबके कारज सारे।

तब दसरत घर जनम राम।१। पतित.....।

ताड़क बन में ताड़का मारी। गोतम नार अहिल्या तारी।

रीसीयन के भये पूरे काम।२। पतित.....।

धनुस तोड़ सीताजी ने ब्याही। सुर नर मुनि सब महिमा गाई

तब कोसलपुर आये राम।३। पतित.....।

केकई ने विध्य मचाई। बन में जा हरि कुटी बनाई।

तब रावण ने मारयो राम।४।

सीता संग परबु निज पुर आया।

मुनि वसिस्ट ने तिलक चढ़ाया।

तुलसी दास गुण गाये राम।५। पतित.....।

दास रुड़मल सुदकर गाया। सभी सभा में आनन्द छाया॥

सबसे उत्तम हे ये काम।६। पतित.....।

85.नर तेरा चोला रतन अमोला

नर तेरा चोला रतन अमोला बिरता खोवे मतना

नर तेरा चोला रतन अमोला बिरता खोवे मतना।टेर।

ऐसी देहि मिली हे नर की, भगति करी नहीं इसवर की,

सुद तू भूल गया उस घर की, नींद में सोबे मतना।१।

जो कुछ तेरी पिछल करणी, सबही होंगी तुमको भरणी,

असी हे वेदो मे बरणी, देक दुक रोवे मतना।२।

रिसी मुनि नर सबी फिकर में, विसमय के आगे चक्कर में,

किसकी आन पड़ी समन्दर में, तिरले रोके मतना।३।

बदरी बांद कमर हो तगड़ा, देक्या जुटा जग का झगड़ा,

सीदा पड़्या मुक्ति का दगड़ा, कायर होवे मतना।४।

86.सिव भोले भण्डारी रे

सिव भोले भण्डारी रे...।

सिव भोले भण्डारी रे सजनो सिव भोले भण्डारी

भस्मासुर ने भस्म किया तब बन गये नर से नारी

वो बन गये नर से नारी।१।

भस्मासुर ने करी तपस्या, वर दीनों तरीपुरारी।

जिसके सिर पर हात धरेगा, भस्म होय नर नारी,

वो भस्म होय नर नारी।२।

सिव के सिर पर हात धरण की, मन में दृष्ट विचारी।

जब तो सिव चहुंदिस में डोले, लग्यो देत्य डर भारी,

वो लग्यो देत्य डर भारी।३।

तब गिरजा रुप धार हरि बोले, बात दुस्ट से प्यारी।

जो तु मुझको नाच दिकावे, बणजाऊं नार तिहारी।

वो बणजाऊ नारी तिहारी।४।

अपने कर धन नाच किया तब, भस्म भया मति मारी।

रुड़मल मांगे सो देवे, सिव भक्तन हितकारी।५।

87.केयां रुस ग्यो रे नन्दलाल

केयां रुस ग्यो रे नन्दलाल, खाले खींचड़लो-२

खींचड़लो बड़ो स्वाद, खाले खींचड़लो।टेर।

थारो बाबो गयो छ गावड़े २, वो न जाण कद बावड़े २,

तूने बाबा बिना नहीं आवड़े २, मारी आता ही खांसी खाल।१।

मे घणी सवेरे उठकर २, ल्याई छी खीचड़ो कूट कर २

राँध्यो छ भारी घोटकर २, मीठा की तो घाल दीनी दाल।२।

मे करमा बेटी जाट की २, तू क्यो मारा सू आट की २

तूने घी घालू भर बाटकी २, तूने खाटो भी देस्यू घाल।३।

जब धाबल्या की ओट कियो २, जी तब कानो भोजन कियो २

कहे रुड़मल परण रख लियो २, भगतां री भीड़ी गोपाल।४।

88.संतो कांई आवे रे कांई जाय

संतो कांई आवे रे कांई जाय, बोले रे ज्यांकी खबर करो।टेर।

पाणी का एक बण्या बुदबुदा, धरया आदमी नांव।

आया था हरि भजन को रे, आर बसा दिया गांव।१।

हस्ती छुटचा ठाण से जी, कस्बा पड़ी पुकार।

दरवाजा दस बन्द था जी, निकल गया वो असवार।२।

निज मन्दर चोरी भई जी, चोरी-चोरी गई इक लाल।

क्या पता कुण ले गया जी, फुटी नही छे दिवाल।३।

कहत कबीर सुनो भई सादो, यह पद हे निरवान।

या पद को कुई करे खोजना, वो ही छ सन्त सुजान।४।

89.हीरा

तेने हीरो सो जनम गमायो रे भजन बिना बावरो फिरे।टेर।

कबी न आयो संत सरण में, कबी न हरि गुण गायो।

पच पच मरयो बेल की नाई सोय रहो रे उठ खायो।१।

या संसार हाट बणयां की सब जग सोद आयो।

चाणक माल चोगणा कीनों मुरक मूल गमायो।२।

या संसार फुल सिंमल को, सुवो देक लुभायो।

मारी चूंच रुई निकलणी, सीर धुन धुन पसतायो।३।

यो संसार माया को लोबी, ममता महल चुनायो।

कहत कबीर भजन बिन बन्दा हात कछु नहीं आयो।४।

90.मारा सतगरु दिई छः बताय

दलाली हीरा लालन की।टेर।

लाल लाल सब ही कहें जी, सब के ही पल्ल लाल।

खोल गांठ परकी नहीं जी इस विधि भयोजी कंगाल।१।

लाल पड़ी बाजार में जी, खलक उलाड़्या जाय।
मुरक ठोकर दे चल्या जी, ग्यानी तो लेय उठाय।२।
लाल पड़ी दरयाव पर जी, जगमग जोला खाय।
आया लालारां पारकी जी, लीनो छ: तुरन्त उठाय।३
लाली लाली सब कहें जी, लाली लखी न जाय।
लाली लखी एक दास कबीरा, आवा गमन मिट जाय।४।

91.माया

ज्या में चन्दा भी दरस वो नाही, मायारे रंग बादलो।टेर।
काया में माया बसे रे ज्यू पत्थर में आग।
हरी मिलण तू चाहे तो, चकमक होकर लाग।१।
चोर चुराई तूम्बड़ी जी, दाबे जल के मांय।
वो दावे, बा उकसजी, करनी छ: छानी वो नायं।२।
काम करोद का बण्या बादला, गरज रहा अहंकार।
आसा तृस्णा कहे बिजली, भींज रहा रे संसार।३।
ग्यान पवन जब से चली जी, बदल दिया उड़ाय।
कहत कबीर सुनो भई सादो, चंदा भी दरस्या जी आय।४।

92.तू मोह माया न छोड़

तू मोह माया न छोड़ राम ने भज रे राम ने भज रे।
थारी उमर बीती जाय रीस ने तेज रे।टेर।
थाराँ माता पे आया बाल, धोळा की लज रे धोळा की लज रे।
माता पर डोले काल ब्रह्म न जप रे।

थारा गोड़ा दिया जवाब कमर गई लुलरे।

आक्यां से दिके नांही कान गया रुजरे।२।

थारी तरीयाँ छोड़यो प्यार, कदर नही करे कदर नहीं करे।

थारा बेटा बोले बोल मरे लो कद रे।३।

यू कह गये दास कबीर, गुदड़ा लदरे गुदड़ा लदरे।

थारो लेको लेलो राम मरेलो जद रे।४।

93.कळयुग में कदर घटी

महाभारत वेद पुराण की कळयुग में कदर घटी हे।टेर।

पण्डित कह मेरा कया का इरादा २

मुकदमा कहे टाल कर दादा २

अबके संवत होगा ठाडा,

तोड़-तोहि गाडा भरदयू नाज कारे, ऐसे कह सभा नटी हे।१।

रण्डी कहे मे करुंगी गाना, बड़े बड़े आ जांय स्याना,

जुड़े कचेड़ी जुड़ जाये थाना.....

तोड़-अरे कीरण उगी रे जब भान की,

तब तक तो सभा जूटी हे।२।

पांच सात लागे बतरावन, सो सो रिप्या लगे चढ़ावन,

सारी रात तक मंड गया गायन.....

तोड़ - ऐजी रिप्या बरसे रोकड़ी, रिप्या रास लुटी हे।३।

पण्डित आगे पाटा न चोकी रंडी आगे जाजम सो की,

सुखी राम कहे बात अनोकी.....

तोड़ - अरे तुम सुरत करो विचार के,

ऐसे सब बात घटी हे।४।

94.सतगरु दरसण देता जाज्यो जी

सतगरु दरसण देता जाज्यो जी।टेर।

सासरिया की बात पिहर में कहता जाज्यो जी।टेर।

सतगरु आया पावणाजी, काई करु मनवार।

अलके सू पलके करु जी, दूद मिलावू ल्यार।१।

सोना ज्यों पीळी पड़ी जी, लोग बतावे रोग।

रोग दोस मारे कई माही छ: संत मिलण का जोग।

बाबुल मारो वेद्द बुलायो, पकड़ दिखाई बाय।

आय वेद्यजी घर पदारो मारे चित भजना के मांय।३।

मारा देस का लोगां भलेरा पहरे कण्ठी माळा।

मारा लागे भई भतीजा, राणाजी का साळा।४।

सासरियो संसार त्याग दियो, पीहर प्यारो लागे।

मीरां बई न सतगरु मिलगा, चित चरणा के सागे।५।

95.मीरांबई

मीरां सादारो संग छोड़ो ये

लाज थारो मेड़तो मेवाड़ सारो ये।टेर।

मीरां को हरि देवरो जी, राणा को दरबार।

मीरां नाचे परेमसु जी, कर सोला सिणगार।१।

मीरां हर की लाडलीजी, राणो बन को ठुठ।

समझायो समज्यो नहीं जी, नहीं ले जाती बेकुण्ठ।२।

सांप पिटारो राणो भेज्यो, दियो मीरां ने जाय।
खोल पिटारो देकण लागी, बणगो नोसर हार।३।
जहर को प्यालो राणा भेज्यो, दियो मीराँ के हात।
कर चरणामरत पी गई जी, साय करी रघुनात।४।
वरन्दावन की कुंज गल्यां मे रच्यो दधि को कीच।
मीरां न दरसण दिया हरी, सब सकियां के बीच।५।

96.माने कह गया परबुजी आवण की

आवण की जी मन भावण की,
माने कह गया परबुजी आवण की।
सावण की जी ललचावण की,
माने कहे गया परबुजी आवण की।टेर।
आप नहीं आवे लिक नहीं भेजे।
बाण पड़ी जी ललचावण की।१।
ये दोय नेन कयो नही माने।
नंदी बहे ज्यु सावण की।२।
हमारा पिया परदेस बसत हे।
पंक नहीं जी उड़ जावण की।३।
मीरां के परबु गिरदर नागर।
चेरि भई जी तेरे दावण की।४।

97.राम सुमर ले रे मन गेला

वो थारा सतगरु दे रया हेला।टेर।

एक डार दोय पंछी बेटचा, कुण गरु कुण चेला।
गरु की करणी गरु करेला, चेला की करणी चेला।१।
माली का न बाग लगायो, बीच बीच ना दिया केला।
कचा पका की जात ने जाणी, तोड़ा फुल नवेला।२।
राजा काने कुण्ड बनायो, बीच बीच बा दिया गेला।
पापी मन तू जाकर सारा, मन का घोळ मेला।३।
कोड़ी कोड़ माया जोड़ी, जोड़ बणा लिया ठेला।
कहत कबीर सुणो भई सादो, संग नहीं चलता धेला।४।

98.मारे गरुदेव घर आया रे

मारे गरुदेव घर आया रे आणन्द वेग्या अपार
आणंद वेग्यो अपार सखी मारे आणंद वेग्यो अपार।टेर।
मारे गरुदेव घर आया, मारे हरदे आणंद छायो।
मारे करम धरम सब भाग्या ये, एसी लागी उबार।१।
मारे घर बादल गरनाया, ये बीजळी का अक्स सवाया।
मारे दूदा मेवां बरसे ये, बरसे अमरत धार।२।
मारे आंगण मोती बरसे, मारे देक देक मन हरसे।
मारे होगा मनकां चाया ये, होगी बेड़ा पार।३।
यो जीवाराम यू गावे, मारे गरुदेव मन भावे।
खेवटिया बनकर आया, ये भव से कर दिया पार।४।

99.माता बेना हुणो हारई सज्जना

माता बेना हुणो हारई सज्जना राकणो आद हमेसा कना।

छ: मिना को बाळक कर दिदो ब्रह्मा विष्णु महेस कना।टेर।

ब्रह्माजी लसमीजी गिरजा मन में कपट चलाया कना।

अनुसूया सी सती जगत में, बहुत ही नाम कमाया कना।१।

जल भुन्द के वो अपने पतियों से ऐसा बचन सुनाया कना।

अनुसूया सत खण्डन कर दो हमरा मान घटाया कना।२।

रुप सादु का धरके तीनो अनुसूया घर पहुंचे कना।

भोजन करल्या बाबा सती ने ऐसा वचन हुणायो कना।३।

वचन बद्ध कर अनुसूया को कपट का वचन सुनाया कना।

नंगी होके भोजन करा नहीं सादु भूका जावे कना।४।

सत के नाम से दे जल छीटा, पलने ड़ाल सुलाया कना।

छ: मिना का बाळक करके, अपना दूद पिलाया कना।५।

कई दन तक घर नही पुगे तीनो हेरन आई कना।

भात सती से मापी लेकर असली रुप दुवाया कना।६।

रुड़मल ने देको सज्जणो सत का भजन बनाया कना।

सत एक वो चीज जगत में तीनों देव हराया कना।७।

100.मारा जनम मरण का साती जी

थाने ना बिसरु दिन राती।टेर।

था देक्या बिन कल न पड़त हे, जाणत मेरी छाती।

ऊंची चढ़ चढ़ पंथ निहारु रोय रोय आक्यां राती।१।

यो संसार सकल जग झूँटो झूँटा कुळ रा न्याती।

दोऊ कर जोड़या अरज करु छु सुण लीज्यो मेरी बाती।२।

यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यू मदमातो हाती।

सतगरु हात धस्यो सिर उपर आंकुस दे समझाती।३।

पल पल पिव रो रुप निहारु निरक निरक सुक पाती।

मीरां के परबु गिरधर नागर हरि चरणा चित ल्याती।४।

101.अस्यो देस माको रे सादो भई

अस्यो देस माको रे सादो भई, अस्यो देस माको रे।टेर।

जनम मरण की दनया मिटगी, नही काल का चारा रे।१।

संयम नियम का सम दम करके, सुरत सबद के पारा रे।२।

सूर्य चन्द्रमा नो लक तारा, यां सू भी परम्परा रे।३।

ब्रह्मा विस्णु चोबीस अवतार याका भी नीचे पसारा रे।४।

कई महिमा कहू उस रे देस की जनम मरण सू न्यारा रे।५।

राम नाम सतगरु मिलगा, आत्म ग्यान उजारा रे।६।

बाला राम सरण सतगरु के, परकट सबद उचारा रे।७।

102.संजीवन बूंटी लाबा ने

हनुमान ने खंदायो श्रीराम, संजीवन बूंटी लाबा ने।टेर।

रामचन्द्रजी बीड़ो गेरयो, भरी सभा के माय।

पड़्यो पड़्यो बीड़ो कुम्भलायो, हनुमत लीनो खाय।१।

बीड़ो खाकर चले पवनसुत, परबत पहुंचे जाय।

सब वृक्षक तलदीप देखकर, पर्वत लियो छ: उटाय।२।

भरतराय को बाण लग्यो जब, अवधपुरी के धाम,

गिरयो भूमि पर मूरचित होकर,

मुक से तो बोल्यो जे श्रीराम।३।

किण के तो तुम पुत्र कहावो, कहा थाको नाम।
किण राजा पे विपत पड़ी हे, परबत ल्यायो जी किण काम।४।
रामचन्द्र को पायक हुं मे हनुमत मेरो नाम।
लसमण राय के बाणो लाग्यो हे,
परबत ल्यायो हूँ बूंटी काम।५।
आय बाण पर बेट पवनसुत सोच न मन में लाय।
तुळसीदास आस रघुवर की लंका में देऊँ पहुचाय।६।

103.सत्संग मोटी दन्याँ में रे

सत्संग मोटी दनया में रे कोई बडभागी ने पाया।टेर।
सत्संग से सुदरे बाल्मिकी, जग की परीत लगी सब फीकी,
रामायण रच दीन्ही, साट सहस्त्र विस्तार में,
निरभय हो हरि गुण गाया।१।
पुरव जनम नारद रिसीराई, दासी पुत्र थे सेवा ठाई,
सत्संग में विद्या पाई, लाई ब्रह्या विचार में,
फिर जनम ब्रह्य घर पाया।२।
घट से परगटे अगस्त मुनि ग्यानी, वो सत्संग की महिमा जाणी
तीन चलु किया सागर पाणी, पिया एक हो बार में
सो सुयस जगत में छाया।३।
संतो की संगत नित करिये, हरदम ग्यान हरि का धरिए,
'रविदत्त' कुकर्म से दरपणो, दन निकळ जाय करार के
सिर काल बलि मंडराया।४।

104.बजरंग बली

वा वा रे बजरंगी बाला बड़ो बल कारी थूँ।

1.बाली बेस मनड़ो मचळ्यो, कुदने अम्बर में उछळ्यो।

कास्यप को भाण नीगळ्यो, अस्यो हदकारी थूँ।

वा वा रे - - - - - - - - - - - - - - -

2.पाणी पाकाण तरायो, लसमण को पराण बंचायो।

जगड़ा मूँ जीत लायो, रघुवर नारी थूँ।

वा वा रे - - - - - - - - - - - - - - -

3.गाज्यो हनुमान हटीला, रावण का बंद ढीला।

किना हे तोड़ कीला, मारी किलकारी थूँ।

वा वा रे - - - - - - - - - - - - - - -

4.बाज्यो भारत मे भंगड, लाज्यो रे लसकर लंगड़।

जोदो जबर हे जंगळ, रण को खेलाड़ी थूँ।

वा वा रे - - - - - - - - - - - - - - -

5.माते रागव जी लारे, सिरा सिवसक्ति थारे।

करले जो मन में धारे, बाल ब्रह्म चारी थूँ।

वा वा रे - - - - - - - - - - - - - - -

6.भेरव तु रुद्र कहायो, भक्तारी भीड़ में आयो।

जामण को न दुद लाज्यो बड़ो बलकारी थूँ।

वा वा रे - - - - - - - - - - - - - - -

105.मईला मन ने होजो करो

होजो करोनी म्हारा भई रे, मन मईला साप करोनी।

मारा भई - - - -

थारी कणि वद वेला उजळई मन महिल ने - - - - -

उजळा वरण पाय बगुला ने समन्दर नावा जई।

जळ मछियाँ पग पड़त हे ले के गगन उड़ जई।

मन महिला - - - - - - -

काळा नाग टिपारा का वासी जाने दूद कटोरा पाई।

लपट जपट कर पुंगी पे आवे, डाव पड़या डस जई।

मन महिला - - - - - - -

काळी ऊन सदारंग काळी पण भीतर काळी ना होई।

ऊपरलो रंग उड़ जावे लो नज काळो नहीं जई।

मन महिला - - - - - - -

कपटि का संग नही करणा रे, चुगली बराबर खई।

कहत कबिरा सुणो भई सादू, भीड़ पड़्या भग जई।

मन महिला ने साप करो - - -

106.परेम बिना राम मिले ना रे भई

चाहे लाक करे चतुरई, परेम बिना राम मिले ना।

मेरे भई॥टेर॥

सिव ब्रमा ओर सुर मनका दिक सेवा करत सदाई।

वो खुद सेवा करन भक्त हित बणग्यो सेणो नाई॥

परेम बिना - - - - -

बिना परेम का मेवा त्याग्या राग विदुर घर पाई।

घी अन खीचड़ो रुच रुच खायो करमा के घर जई।

परेम बिना - - - - - -

मीराँ डुबी परेम मगन में मुरत नाई समाई।

सारती बण अरजुन रत हा, क्यों भुल्यो आप ठुकराई।

परेम बिना - - - - - -

परेम नेम बिन दरसण दुरलब कोटी जतन कर भई।

बीना भाव भक्ति नहीं भेरव भटक भटक मर जई॥

परेम बिना राम - - - - -

107.सोरठ

कर सुकरत भज भगवान ,वृथा जनम गमावे रे,

थारे खड़ो सिराणे काळ गरू बिना कुण बचावे रे॥ टेर॥

1. चेत महिनो लागियो रे फूली सब वनराय।

चेत सके तो चेत प्राणी अवसर बीत्यो जाय फेर,

अवसर नहीं आवे रे । कर..... ॥

2. बेसाक महिनो आवियो रे आई आखा तीज,

क्यों सोवे नींद मे रे बदन जायेगा छीज।

रामगुण क्यों नहीं गावे रे। गरु बिना..... ॥

3. जेठ जगत से नेह कियो, भलो कहे नहीं कोय,

सुमिरण कर गरु देव को रे पार लगावे तोय।

गरु बिना गम नहीं पावे रे । गरु बिना..... ॥

4. आसाढ सबूरी राखज्ये रे, गहरे बादळ वाळो जोर,

बूंदाँ बरसे प्रेम की रे, गरज रियो गणगोर।

ओर कुछ भेद नहीं पावे रे। गरु बिना..... ॥

5. सावण महिनो आगयो रे आई तीज त्योहार,

जग पूजे कटपूतळी रे में पूजूँ तीज त्योहार।

वोही भव पार लगावे रे । गरु बिना.....॥

6. भादवो भरकुटी महल, ताल के चढे तिरकुटी महल,

गहन नंगारा गूर रियो रे उठ कियो अगम की सहल।

नजर एक जोगी आवे रे। गरु बिना.....॥

7. आसोज महिनो लागियो रे पिया मिलण री आस,

विरहण ऊबी बाट उड़िके पूरो मन की आस।

पास कोई नजर न आवे रे। गरु बिना.....॥

8. कारतिक कुकरम छोड़के, भजन करो निसकाम ,

देह में देव बाहर मत भटको, लाखों समरिया राम।

वोही भव पार लगावे रे। गरु बिना.....॥

9. मगसर महिनो मुळको वाद्य करो मन जहर,

चरण दरस्टी से नजर न आवे ग्यान दरस्टी से हेर।

फेर भव भव जल नहीं आवे रे। गरु बिना.....॥

10. पोस महिनो लागियो आयी बार सरद,

जिवड़ा ही जो नर मरे उनका नाम मरद।

मरद में पाँच मिलाओ रे। गरु बिना.....॥

11. माह महिनो लागियो रे आई बार बसंत,

काया भई गरु देव की रे चितो आतम संत।

संत यूं ही कंत मिलावे रे। गरु बिना.....॥

12. फागण महिनो लागियो रे रचियो सतगरू फाग,

कहे कल्याण नहीं खेले, फूटे उनके भाग।

सतगरू फाग खेलावे रे। गरु बिना..... ॥

108.जोबन धन पामणो दिन चार

जोबन धन पामणो दिन चार, याँरो गरब करे जो गँवार॥

पसू चाम का बनत पन्हेया, नोबत ओर नंगारा,

नर देह का कुछ ना बनेगा, जळ-बळ होय अंगारा॥

जोबन धन पामणो..... ॥1॥

पाँच तत्व का बना पिंजरा, भीतर भर्या भंकारा,

उपर रंग सुरंया, कारगरी करतारा,

जोबन धन पामणो..... ॥2॥

बीस भुजा दस मस्तक वाँके, पुत्र घणा परिवारा,

मद गरद में मिलग्यो ऐसो, लंका के सिरदारा,

जोबन धन पामणो..... ॥3॥

यह संसार हाट का मेळा, बिणज घणा व्यापारा,

कहत कबीर सुणो साधू, हरि भजन उतरो पारा,

जोबन धन पामणो..... ॥4॥

109.करिया क्यो नहीं ब्रज रा मोर उदाजी माने

किन्हा क्यों नहीं ब्रज रा मोर ॥ टेर॥

पंख पड़े तो ज्याँरी कानजी उटावे, टाँके ज्याँरे मुकुटाँ ठोर,

उदाजी म्हाने..... ॥1॥

वन में ही रहता रे साँवरा वन फळ खाता रे,

वन में ही करता किलोळ, उदाजी म्हाने..... ॥2॥

माता जसोदा ज्याँने चुगा रे चुगाती जी,

बेटा रेता नंदजी री पोळ, उदाजी म्हाने..... ॥3॥

बेट कदम पे टेर लगाता जी,

सुणे मारा चित रा चोर, उदाजी म्हाने..... ॥4॥

बाई मीराँ के गिरधर नागर,

यो मरुधर देस कटोर, उदाजी म्हाने..... ॥5॥

110.थारी लंका सुनी हो गई रे

थारी लंका सुनी हो गई रे को परा गिया कंत॥टेर॥

तुने बोला ऐसा कर दुंगा, अग्नि से धूँआ बन्द कर दुंगा,

सिढी लगावु नभ के उपर अलग निकालु पंथ रे,

थारी मन की मन मे रहगई रे..... ॥

सात समन्दर नो हे खाई कुम्भकरण सा हे बल भाई,

मेगनाथ सा पुत्र कही ये, सबको आग्यो अन्त रे,

थारी किस्मत जोलो खागई रे॥ कठे..... ॥

सोना का हे, कोट कांगरा, भाँत–भाँत रा लाक–लाक रा।

ज्यापर कुदे रिछ वान्दरा धरणी पड़ियो कंत रे,

थारी कजा आन ले गई रे॥ कठे..... ॥3॥

सिता चोर कर थूँ ले आया, लंका राज विभिसण पाया,

मोहन कहे थने मार गिराया, ऐसो बड़ो भगवन्त रे,

थारी लंका सूनी हो गई रे॥ कठे..... ॥4॥

111.दादो म्हारो गाँव गयो दुजा

दादो म्हारो गाँव गयो दुजा, भलाय गयो पुजा,

जिमोजी कई आंटकी कर्मा छे म्हारो नाम यो ही छे म्हारो

गांव बेटी जाट की.....॥

उठ पेली में स्नान मे किन्हो, खोल मन्दिर बुवारो दिनो।

ल्याई गोरड़ी गाय को दुद परभुजी मुकड़ो धोकर पिलो,

यो तो खालो खीचड़ो अन जीमण में कई लाज।

कड्डी तो गालु छाछ की॥ कर्मा म्हारो.....॥

काले थाँके तोई सिरो बणाऊँ पाणी मीठोड़ा कुआ को लाऊँ।

जिमें घी की हे धार, जिने मुंगा की दाळ, थाने छोटा-२ फुल का जिमाऊँ॥

थेतो भावे सो ले लिज्यो महाराज बोलण की काई लाज॥

कमी हे काई बात की॥ कर्मा म्हारो नाम .....॥

थारा कहा कहा हुकम निभाऊँ। आप जीमों तो पछे रोटी खाऊँ।

धावलिया को परदो लगाऊँ कहो तो अपुटी फिर जाऊँ।

थे तो रुच रुच भोग लगाओ का जीमता ही जावो॥

परेम वाळी बात की॥ कर्मा म्हारो.....॥

पड़दो उठा कहे कांई ल्याऊँ, धाप गया हो तो हात छुपाऊँ।

काले जीमण ने बेगा आज्यो, थारे मक्कारी राबड़ी बनाऊँ।

परभु बोले अब में जाऊँ काले बेगो आऊँ॥

बांसुरियाँ भुल्यो काठ की॥ कर्मा म्हारी.....॥

बापु गांव से जब ही आयो, कर्मा सारो हाल सुणाओ।

बापु के मन अचरज आयो, कर्मा परभु ने केसे जीमायो॥

परभु आकर दरसण दिकावे भरम मिटजावे।

अरज रतनलाल की॥ कर्मा म्हारो.....॥

112.थाली भरन लाई खीचड़ो

थाली भरन लाई खीचड़ो उपर घी की वाट।

जिमो म्हारा श्याम धणी जिमावे बेटी जाट की॥टेर॥

बाबुल म्हारो गांव गयो हे, नाजाणे कद आवेला।

वारे भरोसे बेटा रहयो तो भुका ही मर जावेला॥

तु जीमें तो मे भी जीमुं जोवो थारी बाटड़ी॥

जीम्हो म्हारा श्याम धणी.....॥

बार बार मन्दिर में जाती बार बार युँ बोलती।

क्युना ना जीमें रे मन मोहन करड़ी करड़ी बोलती॥

आज जीमाऊँ थाने खिचड़ो काले छाछ राबड़ी।

जीम्हो म्हारा श्याम धणी.....॥

परदो भुल गई सावरियां परदो फेर लगाऊँ रे।

धाबलिया रे ओले बेट कर श्याम खिचड़ो खायो रे।

भोला भाला भक्ता सूँ थे कदियन राकी आटडी॥

जिम्हो म्हारा.....॥

भक्ति हो तो करमा जेसी सावरिया घर आया रे।

भक्त मंडली सब जन परभुजी थांका ही गुम गया रे॥

सच्चा मन सुँ करां विनती मुरती बोले काठ की।

जिम्हो म्हारा.....॥

113.मनक जनम में सुकरत करलो

मनक जनम में सुकरत करलो आगे को सादन करलो नी।
एक दन अठासूँ जाणो पड़सी अठे आपणो घर कोनी॥टेर॥
एक दन अठासू.....॥
सात सात जनमां का भाया पाप धरम साते चाले।
करम परदान जगमें रेवे, करयां जस्यां पड़ग्या पाले॥
कोल कीदो अबकी वेळा में, विको संपट करलोनी॥
एक दन अठासू.....॥
आण पडच्या माया का जाळ मे अगम निगम की सुधकोनी।
सत सायब घणो समजावे पण थूँ तो मान्यो कोनी।
हिरा ने काँकरो समज्यो रति भर कदर कोनी॥
एक दन अठासू.....॥
बाळपणो हँसता रमताँ बीत गयो क्षण के माही जी।
भर जोबन टेम रंगिली कई पूँछो केणो काई।
भूडापा में अबकी बणगी अबे बात बस की कोनी॥
एक दन अठासू.....॥
वेद वाणियाँ ग्यान कता में सुणबा की फुरसत कोनी।
नाच गाण में रात बितावे रति भर की आदत कोनी।
ओंकारो समझावे अब मोटयाराँ ने परवा कोनी॥
एक दन अठासू.....॥

114.भेरुजी

मतवाळा काळा पाळा ही पधारो परती नात॥ टेर॥

कड़ियाँ घमके घूघरा जी, डमके डेरू हाथ,
चमके बासक नाग ज्यूँ रे, नवलख लाज्यो साथ जी,
मतवाळा काळा॥
काळा करूणा करो जी, बीरा मन री बात,
याद करंता आवज्यो रे, जिलमिल आदी रात जी,
मतवाळा काळा॥
मतवाळा थें मेर करो रे, पावे सुख बहुत पात,
मात हुवे जिण मुलक में, जा जट लाज्यो साथ जी,
मतवाळा काळा॥
प्रभा पेदल आवसी रे सेवगाँ रे साथ,
बाळक बगसो बापजी थें, जोड़े देवाँ जात रे,
मतवाळा काळा॥

115.रसिया

खातिर करलो नी गुजरियाँ, रसियो उबो थारे द्वार॥टेर॥
ये रसिया थारे रोजना आवे, प्रेम हात जब दर्सण पावे,
अर्ध राम को भोग लगावे,
करके मेहमानी अब मत चुके, समय ना बारम्बार।
खातिर करलो॥1॥
हिरदा की चोका कर हेली, नेह की चन्दण चहती नवेली,
दिक्षा लेकर बण जइयो चेली,
पुतरिन पलंग बिछावे, पलक की करले बन्द कवाँड़।
खातिर करलो॥2॥

जो कुछ रसिया कहे सो करियो, सास ससुर को डर मत करियो,

सोलह कर बतीस पहरियो,

दे दे दान सूमकी सम्पती, जीवन हे दन च्यार।

खातिर करलो॥3॥

सबसे तोड़ दे नेह की डोरी, जमुना पार उतरजा गोरी,

निरथक होकर खेलो होळी,

स्याम रंग चढ जाय जदिना, हो जाए बेड़ा पार।

खातिर करलो॥4॥

116. भेरूजी

सुधार काज दास रो पदार भेरवा ॥टेर॥

रमन्त आप कासी में दिपक लेरवा,

पाँव बान्द घूघरा, घमंक भेरवा,

सुधार काज..... ॥1॥

रमाय तेल अंग में, फुलेल फेरवा,

सवार होय स्वान पे, बजाय डेरवा,

सुधार काज..... ॥2॥

ओगट घाट करत नन्दी नेरवा,

दुस्टों को देक तपो तेज तेरवा,

सुधार काज..... ॥3॥

पदम दास सरणे थारे राखो भेरवा,

सेवग की रक्षा करने आवो भेरवा,

सुधार काज..... ॥4॥

117.घणा दन सो लियो रे

अब तो जाग मुसाफिर जा, घणा दन सो लियो रे ॥टेर॥

अब तो जाग मुसाफिर जा, घणा दन सो लियो रे ॥टेर॥

पहली सोयो मात घरब में, उलटा पाँव पसार,

भीतर से बाहर आयो, भूल्यो कोल करार,

जनम थारो हो लियो रे।अब तो जाग..... ॥1॥

दूजो सोयो मात गरब की, सुख से जग में आर,

बेन भूवा अब लाड लडावे, होरयो मंगळाचार,

लाड थारो हो लियो रे। अब तो जाग..... ॥2॥

तीजो सोयो तरिया सेज में, गळ में बायाँ डार,

किया भोग रोग से दुनिया, तन होग्यो बेकार,

ब्याव थारो हो लियो रे।अब तो जाग..... ॥3॥

चोतो सोयो जाय मसाणा, लम्बा पाव पसार,

कहत कबीर सुणो भई सादू, ये सबका भेवार,

मरण थारो हो लियो रे।अब तो जाग..... ॥4॥

118.जगत में जिना दो दिन का

हरिनाम सुमर सुख धाम, जगत में जिना दो दिन का।टेर।

पाप कपट कर माया जोड़ी, गरब किया धनका,

सब छोड़कर चला रे मुसाफिर, बसा हुआ मनका,

जगत में..... ॥1॥

सुन्दर काया देक लुभाया, मोज करे मनका,

काल बली का लागे जटका, भूल गया तनका,

जगत में..... ॥2॥

यो संसार सपना की माया, मेल पल छिन का।

ब्रह्मानन्द भजन कर बन्दे, नाथ निरंजन निका,

जगत में..... ॥3॥

119.राणी मारो कई करसी भगवान

मनोदर माने संकर दो वरदान, राणी मारो कई करसी भगवान॥टेर॥

एक दन संकर मारे घरे आया, मारा पिता ने नूँत जिमाया,

जीम चूँट प्रसन्न भये सिवजी, जद लंका दिनी दान,

राणी मारो..... ॥1॥

लंका हरीका कोट हे मारे, सात समुन्दर के बसत किनारे,

मेघनाथ सा पुत्र हमारे, कुम्भकरण बलवान,

राणी मारो..... ॥2॥

राम लखन दसरथ का लाला, सारी श्रस्टी के रखवाळा,

तुलसी दास भजन कर प्यारा, वो करसी कल्याण,

राणी मारो..... ॥3॥

120.भज नंदिस्वर महाराज निरंजन निका

भज नंदिस्वर महाराज निरंजन निका-निरंजन निका,

में धरूँ हिरदा में ध्यान सदा सिवजी का॥ टेर॥

थारे बाँये अंग में नाथ गिरजा सोहे-गिरजा सोहे,

ससी चन्द्रमा भाल तलक सब सोहे,

भज नंदिस्वर..... ॥1॥

थारे जटा के बच में बहे गंग की धारा-गंग की धारा,

हे विस धर का थूँ श्रंगार, सरपों का भारा,

भज नंदिस्वर..... ॥2॥

थें पीवो भांग ने गोट, धतुरा खावो-धतुरा खावो,

हो बेलन के असवार, जोगी कहलावो,

भज नंदिस्वर..... ॥3॥

रामानन्द उसताद थारा गुण गावे-थारा गुण गावे,

ये भरी सभा के बीच अरज फरमावे,

भज नंदिस्वर..... ॥4॥

121.आसरो लीनो कृस्ण कनाई को

ओर आसरो छोड आसरो लीनो कृस्ण कनाई को,

हे बनवारी आज मायरो भरजा नानी बाई को॥टेर॥

असुरन मारण भगत उबारण च्यार वेद माही गाई,

जहाँ-जहाँ भीड़ पड़ी भगतों में तहाँ-तहाँ आप करी सहाई,

धरती लाकर सृस्टी रचायी वराह हो सतयुग माई,

असुरण मारण पेलाद उबार्यो परगट भयो थम्बा माही,

बावन होय बली ने छळ्यो करियो काम ठगाई को,

हे बनवारी आज..... ॥1॥

कच्छ मच्छ अवतार धार हरि, सुर नर की इच्छा पुरी,

आदी रात में गजराज पुकार्यो, गरुड़ छोड पोंचे हरी,

भसमासुर को भसम करायो, सुन्दर रूप बने हे हरि,

नारद की नारी ठग लीनी जाकर आप चडे चोरी,

असुरन से अमरत ले लिनो किनो भेस लुगाई को,

हे बनवारी आज..... ॥2॥

परसू राम बी रामचन्द्र भये, गोतम की नारी तारी,

भीलणी के फळ जूँटे खाये, संका त्याग दई सारी,

करमा के घर खीचड़ो खायो, तारी अधम गणिका नारी,

छळ कर तारी पूतणा नारी, कूबजा भई आज्ञाकारी,

सेन भगत के खाँसा मेटया, रूप बनाकर नारी को,

हे बनवारी आज..... ॥3॥

नाम देव, रेदास, कबीरा, धन्ना भगत को खेत भर्यो।

दुर्योदन का मेवा त्याग्या, साग विदुर घर पान कियो,

प्रित लगाकर गोपियाँ तीर गई, मीराँ जी को काज सर्यो,

चीर बडायो द्रोपदी सुदा को, दुसासन को मान हर्यो,

कहे नरसीलो सुणज्यो साँवरा, करलो काम भलाई को,

हे बनवारी आज..... ॥4॥

122.हनुमान

हनुमान को खुस करना आसान होता हे।

सिन्दुर चढाने से हर काम होता हे॥टेर॥

करले भजन दिल से हनुमान प्यारे का।

जिनको भरोसा हे। अंजनी दुलारे का।

जहां आनन्द हे वंहा गुण गान होता हे॥

हनुमान..... ॥

हनुमान के जेसा कोई देव ना दुजा।

हे सबसे बड़ी जग में हनुमान की पुजा।
जहाँ मन्दिर हे वहां इनका सम्मान होता हे।
हनुमान.....॥
श्री राम के आगे पुरा जोर हे इनका।
बनवारी दुनियां में पुरा दोर इनका।
जो मुख मोड़े हनुमत से, परेसान होता हे॥
हनुमान.....॥

123.ओरत

सबसे ऊँचा मान लिया भगवान लुगई ने।
बड़े बड़े रिषयो को मार दिया मान लुगई ने॥टेर॥
कैकई ने काम किया खोट,
एक राजा से वचन माँग लिया मोटा मोटा।
चौदह बरस वनवास राम को भेज दिया लुगई ने।
दसरत जेसे राजा को मार दिया मान लुगई ने
बड़े बड़े.....॥
सति एक सावित्रि असवपिता की जाई।
अपने पति को छा काल जीवन दान ले आई।
यमलोक में राम राजा का मार दिया मान लुगई ने॥
बड़े बड़े.....॥
सति एक अनुसुया जिसने अपना नाम कमाया।
ब्रह्मा विसणु महेस को बालक बणा कर खेलाया।
लसमी ब्रह्माणी पार्वती का मार दिया मान लुगई ने।

बड़े बड़े..... ॥

बचपन मे बहुत बदमास, पिहर में पहुँच गये अपनी बहु के पास।

संत जब बने तुलसीदान, ग्यान दिया हे, लुगई ने।

चन्द्रमा के काला दाग लगा दिया हे लुगई ने॥

बड़े बड़े..... ॥

124.भेरुजी

मतवाळा काळा पाळा ही पदारो परती नात॥टेर॥

कड़ियाँ धमके घूघरा जी डमके देरु हात,

चमके बासक नाग ज्यूं रे नवलक लाज्यो सात जी।

मतवाळा काळा..... ॥

काळा थे करुणा सुणो रे वीरा मनरी बात।

याद करता आवज्यो रे झलमिल आदिरात जी॥

मतवाळा काळा..... ॥

मतवाळा थे मेर करो रे, पावे सुक बहुत पात।

माता हुवे जिण मुलक मे जा जट लाज्यो सात रे॥

मतवाळा काळा..... ॥

परभा पेदल आवसी रे सेवगाँ रे सात।

बालक बगसो बापजी थे, जोड़े देसां जात रे॥

मतवाळा रे काळा..... ॥

125.अतरो कई आळसी

कांई मां आळस तन मन पर लाया, म्हेतो अगले भरोसे थाने ग्या।

अम्बे मां खोड़ो ऊँट तेयार कर दिनो, साहरी जहाज तिराया।

दम्बी होय कुप जल काढयो माँ सागर नीर सुकाया॥

कांई मां.....॥

अम्बे माँ भीड़ पड़ी परतवी राज नरपत मे पावा उभाण आया।

रक्त बिज को रक्त अरोग्यो लम्बी जीभ बधाया।

कांई मां.....॥

अम्बे माँ भुजंग डसियो निज भ्रात मेह को लोवडी सूर छिपाया।

बट दल तो तरासली किनी, नवगण कटक जिमाया॥

इतो कांई.....॥

अम्बे मां गांव भुवाली जातरो खिड़ियो माँ मकन दान यसगाया।

आन्ध पणो मेट दे माई, नितो होसी लोक हसाई॥

इतो कांई आलस तन पर.....॥

126.चादर

मेली चादर ओढ के केसे दवार तिटारे आऊँ।

हे पावन परमेसवर मेरे मन ही मन सरमाऊँ॥टेर॥

तुन मुजको जग मे भेजा, देकर सुन्दर काया।

आकर के संसार में मेने, इसके दाग लगाया।

जनम जनम की मेली चादर अब कई दावा छुपाऊँ॥

मेली चादर.....॥

निरमल वाळी पाकर मुजको न नाम तुम्हारा गाया।

नेयन मुंदकर के परमेसवर, कमीना तुजको छाया।

मन वीणा का तार टुट कर, अब कई गीत सुनाऊँ॥

मेली चादर.....॥

इन पेरो से चलकर के कभी ना मन्दिर आया।

जहां पे होती पुजा तेरी, कभी ना सिस नमाया।

हे हरी मे हार गई, अब कई हार सुना सुनाऊँ॥

मेली चादर.....॥